ज्ञानामृत

मार्च, 1985
वर्ष 20 ❋ अंक 9

मूल्य 1.35

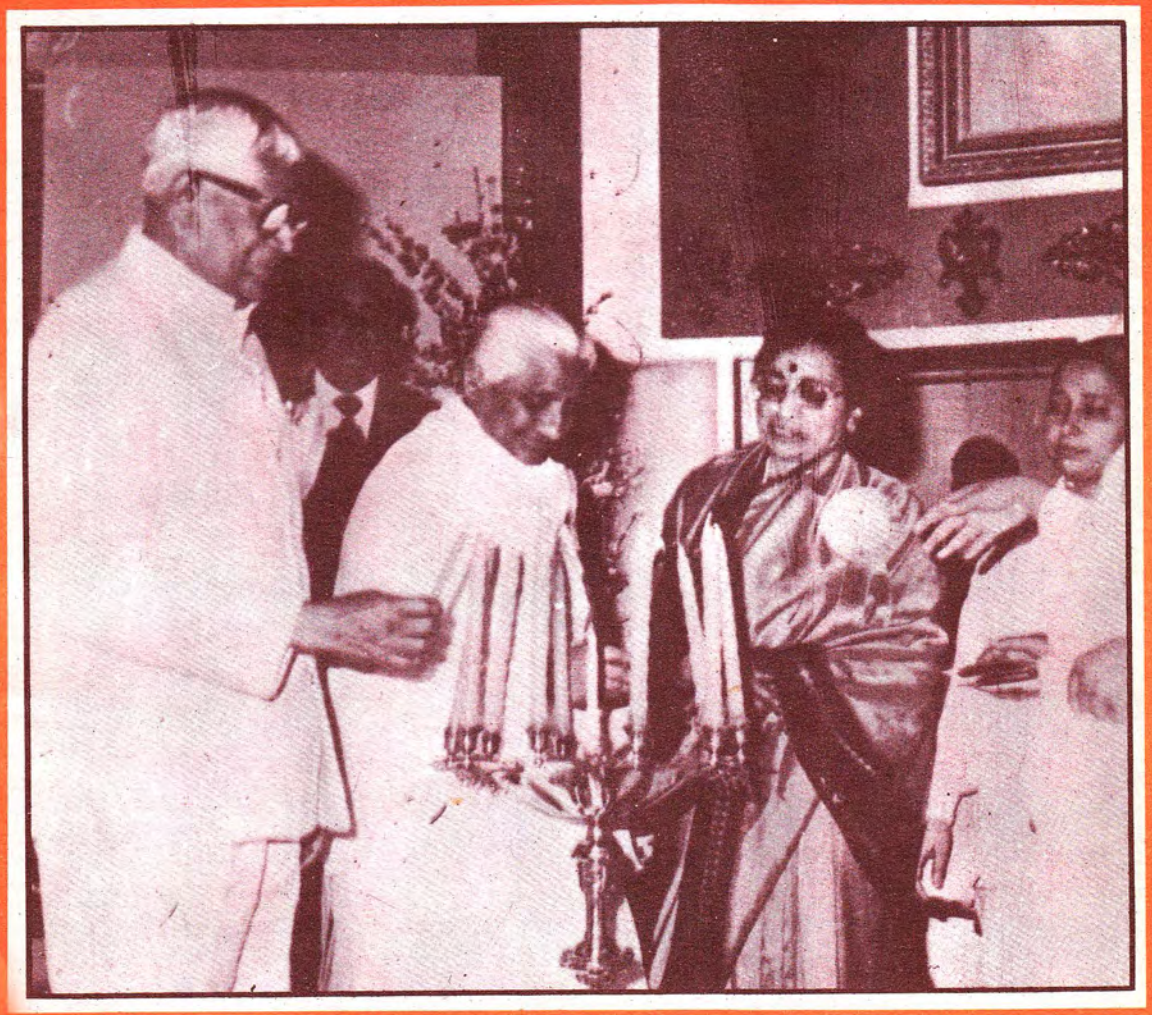

विश्व शान्ति महासम्मेलन का उद्घाटन

भारत के उपराष्ट्रपति भ्राता वेंकटरमन द्वारा ओमशान्ति भवन में दीप प्रज्जवलित कर सम्पन्न हुआ

विश्व शान्ति महासम्मेलन
(चित्रों में)

आबू में आयोजित विश्वशान्ति महा-सम्मेलन के उद्घाटन पूर्व राष्ट्र-गान हुआ। चित्र में मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० जगदीश चन्द्र, मुख्य प्रवक्ता ब्र० कु० ई० विश्व-विद्यालय तथा मुख्य सम्पादक ज्ञानामृत, वर्ल्डरिन्युवल तथा प्युरिटी, यू० के० में पूर्व विदेशमन्त्री लार्ड कैराडोन, उपराष्ट्रपति भ्राता वैंकटारमण, दादी प्रकाशमणि जी, मुख्य प्रशासिका ब्र० कु० ई० वि० विद्यालय, बहन तथा जे० वैंकटारमण।

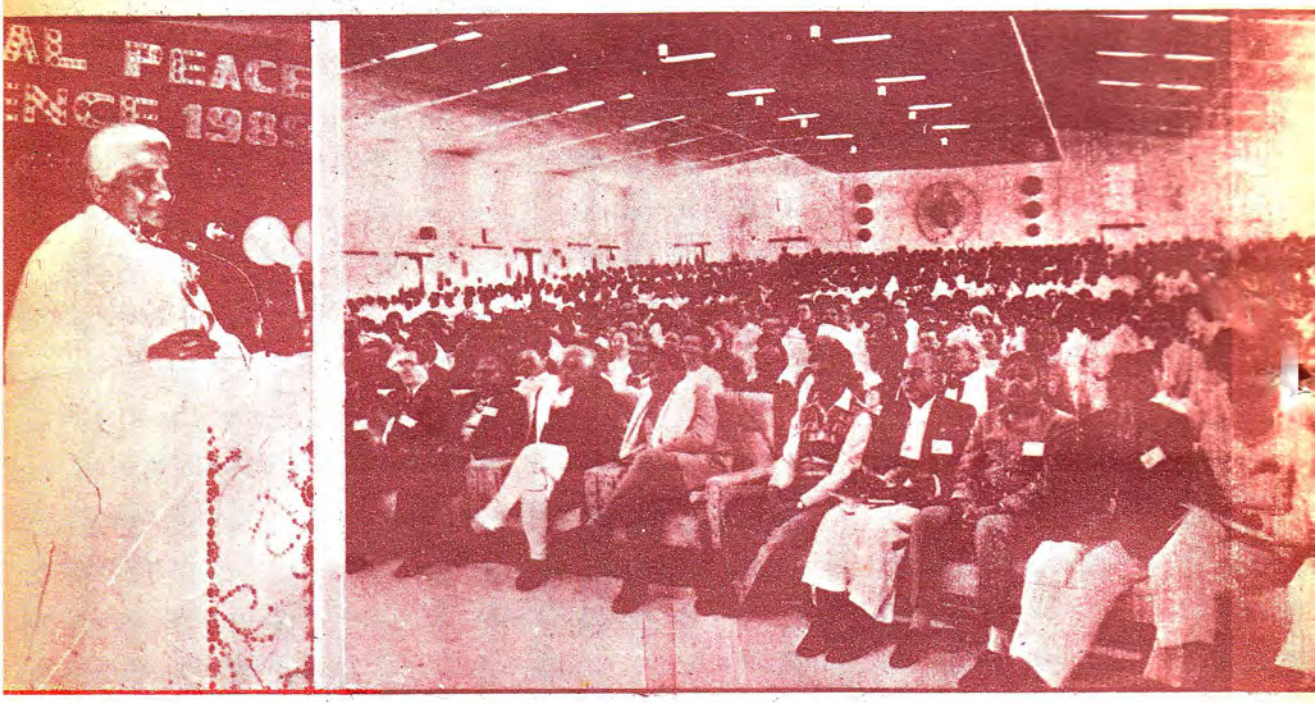

'यूनिवर्सल पीसहाल' में एकत्रित तीन हजार से अधिक प्रतिनिधियों को सम्बोधित करती हुई राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी।

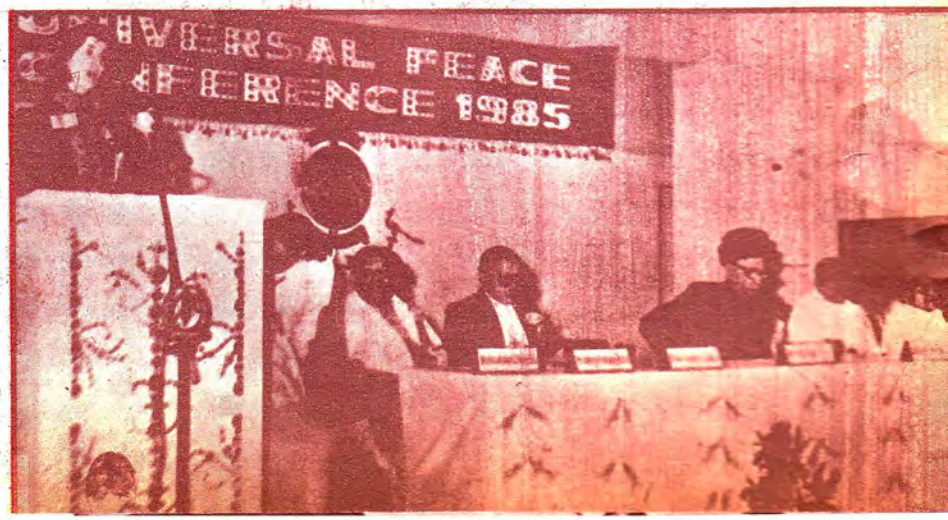

'विश्वशान्ति महा-सम्मेलन' के मांगलिक समारोह में इंगलैंड में कैन्टरबरी के डीन की धर्मपत्नी व प्रसिद्ध लेखिका बहन ईस्थर डी० वाल अपनी शुभ-कामना के बोल प्रस्तुत कर रही हैं। मंच पर यूनिवर्सल सनातन धर्म फॉउन्डेशन के अध्यक्ष, प्राचार्य प्रभाकर मिश्रा, केन्या (किसुमु) के बिशप जोन हैनरी ओकुलु, अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष जस्टिस एम० एच० बेग, राजयोगिनी ब्र० कु० दादी हृदयमोहिनी तथा अन्य बैठे हैं।

'विश्वशान्ति महा-सम्मेलन' के उद्-घाटन समारोह में ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की कुछ कन्याएं स्वागत गीत प्रस्तुत कर रही हैं।

महिलाओं के वर्कशाप में ब्र० कु० सुदेश (लण्डन सेवा केन्द्र की निर्देशिका अपने विचार प्रस्तुत कर रही हैं। मंच पर शकुन्तला सुल्हन; ब्र० कु० प्रेम, न्यूयार्क से बहन लैजली, ब्रुकनैवेल तथा बम्बई के ल्यान्स क्लब की अध्यक्षा बहन मिठा शर्राफ बैठी हैं

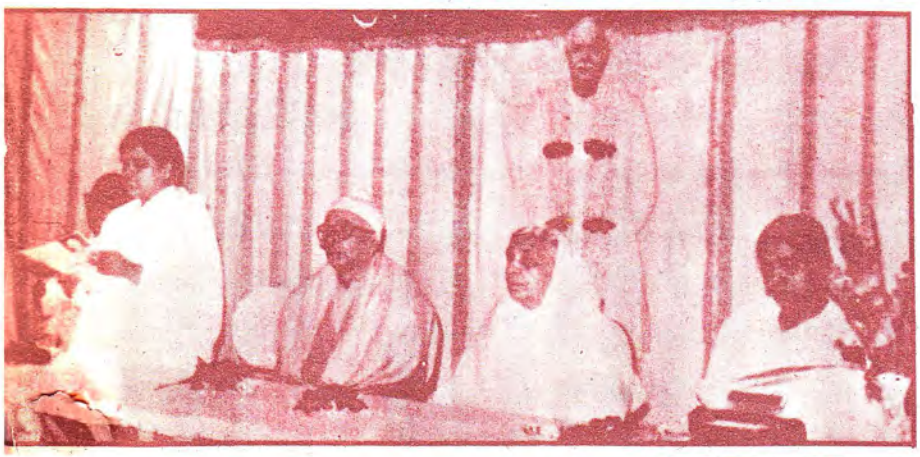

कलकत्ता में विश्व-शान्ति दिवस के अवसर पर ब्र० कु० विन्दु 'ब्रह्मा बाबा' की अलौकिक जीवनी पर अपने सस्मरण सुना रही हैं। मंच पर विवेकानिधी आश्रम के स्वामी मुक्तानन्द, ईस्टर्न जोन की इन्चार्ज राजयोगिनी ब्र० कु० निर्मल शान्ता, एवं ब्र० कु० कानन बैठी हैं।

लातूर में आयोजित कार्यक्रम में ब्र० कु० नीरा भारत सरकार के गृह मन्त्री भ्राता एस० बी० चौहान को लक्ष्मी नारायण का चित्र भेंट कर रही हैं।

Regd No. 10563/65-D(E)-70

'डिवाईन लाईफ सोसाइटी' के अध्यक्ष स्वामी चिदानन्द महाराज तीसरे दिन के अधिवेशन में अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं। उनके दाईं ओर राजयोगिनी दादी जानकी जी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका बैठी हैं। उनके बाईं ओर माऊंट आबू में राजयोग शिक्षिका ब्र० कु० शीलु तथा यूनिवर्सल सनातन-धर्म फाऊंडेशन के अध्यक्ष आचार्य प्रभाकर मिश्रा बैठे हैं।

'विश्व शान्ति महा-सम्मेलन' के अन्तिम दिन ग्याना के उच्चायुक्त भ्राता स्टीव नारायण अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं। मंच पर चीफ प्रवक्ता ब्र० कु० जगदीशचन्द्रजी तथा लण्डन में स्थित राजयोगा सैन्टर की निर्देशिका ब्र० कु० जयन्ती बैठी हैं।

ब्र० कु० चक्रधारी (दिल्ली शक्तिनगर सेवाकेन्द्र की इन्चार्ज) 'राजयोगा द्वारा स्व-परिवर्तन' विषय पर अपने विचार प्रस्तुत कर रही हैं।

'विश्व शान्ति महा-सम्मेलन' के तीसरे दिन के खुले अधिवेशन में भाग लेने वालों में से मंच पर क्रमशः बाईं ओर से मोदी नगर के पाल साइंन्टिफिक रिसर्च ब्यूरो के संस्थापक भ्राता पाल नय्यर, भोपाल जोन के निर्देशक ब्र० कु० महेन्द्र, गुजरात राज्य की मंत्री बहन कोकिला व्यास तथा श्रृंगेरी के जगतगुरु १००८ डा० शिवमूर्ति शिवाचार्य महास्वामी जी बैठे हैं

'न्याय व प्रेम द्वारा परिवर्तन' विषय पर आयोजित वर्कशाप में भाग लेने वालों में से मंच पर बाईं ओर से बैठे हैं जस्टिस एम० एच० बेग, सर्वोच्च न्यायालय के प्रसिद्ध वकील नानी पालकी वाला, गुजरात उच्च न्यायालय के जस्टिस ए० एन० कुरेशी, तथा आस्ट्रेलिया की ब्र० कु० बहन माग्रेट।

अमृत-सूची

१. दस सूत्री आबू-कार्यक्रम
२. दृष्टि परिवर्तन (सम्पादकीय) २
३. अच्छी आदतों को जागृत करने का साधन—राजयोग ५
४. विश्व शान्ति महासम्मेलन का उद्घाटन ७
५. कानून एवं प्रेम—पुर्निर्माण के उपकरण ८
६. महिलाओं में जागृति से ही विश्व में जागृति आएगी ८
७. संचार माध्यमों की दूरी की समाप्ति से ही मानव परिवर्तन एवं विश्व परिवर्तन तथा विश्व शान्ति ९
८. अन्ध विश्वासों एवं विचारधाराओं में परिवर्तन द्वारा ही विश्व शान्ति सम्भव ११
९. मानव सम्बन्धों में सामंजस्य लाने में पत्रकारों का योगदान १२
१०. विश्व शान्ति सम्मेलन-८५ (चित्रों में) १३
११. आत्मा को कर्मेन्द्रियों का स्वामी बनाएं १६
१२. आध्यात्मिक सेवा समाचार १८
१३. स्वपरिवर्तन द्वारा ही विश्व का सामाजिक, आर्थिक ढांचा बदला जा सकता है २१
१४. विश्व शान्ति सम्मेलन में युवक एवं शिक्षाविद् कार्यशालाओं में गम्भीर विचार-मंथन २२
१५. युवकों की समस्याओं का समाधान २४
१६. युग का जुआ, युवा के कंधों पर २६
१७. मानसरोवर में डुबकी २९

दस सूत्री आबू-कार्यक्रम

विश्व शान्ति सम्मेलन के अन्तिम दिवस में हुए खुले अधिवेशन में विश्व परिवर्तन तथा विश्व शान्ति हेतु एक दस सूत्री कार्यक्रम अपनाया गया। अड़तालीस देशों से आए प्रतिनिधियों ने सर्व सम्मति से निर्णय किया कि वे हर प्रकार से प्रयास करेंगे—

(१) जिससे कि अलगाववादी मनोवृत्ति का स्थान प्रेम, एकता, सामंजस्यता ले ले, परिणाम-स्वरूप अपराध कम हों।

(२) जिससे कि संयुक्त राष्ट्र संघ तथा अन्य ऐसी संस्थाएं जो शान्ति के लिये कार्य कर रही हैं उन्हें बल मिले।

(३) जिससे कि धर्मों में विज्ञान का समावेश हो तथा विज्ञान में आध्यात्मिकता का समावेश हो जो शान्तिमय कार्यों में प्रयोग हो।

(४) जिससे कि लोगों को आध्यात्मिक-साक्षरता की आवश्यकता अनुभव हो और ऐसे गुणों को धारण करें जिससे, सामाजिक, राजनैतिक व्यवसायिक जीवन स्वच्छ और अधिक से अधिक हिंसा और अपराध रहित बने।

(५) जिससे कि राजयोग और सकारात्मक विचारों द्वारा अधिकाधिक बीमारियों और द्रव्य प्रयोग में कमी हो।

(६) जिससे कि संचार-प्रसार साधन आपसी भाईचारा बढ़ाने में सहायक हों।

(७) जिससे कि लोग स्व-नियंत्रण द्वारा स्वेच्छा जनसंख्या में नियन्त्रण करें।

(८) जिससे कि युवा वर्ग और महिलाओं को निर्माण कार्य और शान्ति पूर्ण तथा प्रदूषण रहित वातावरण बनाने में अधिक अवसर मिलें।

(९) जिससे कि अधिक से अधिक लोग राजयोग का अभ्यास करें ताकि शान्त एवं निर्द्वन्द्व व्यक्तित्व बने और उनके मन में स्थिरता आए।

(१०) जिससे कि लोग अपने जीवन में मानव मात्र के लिये प्रेम, आदर बढ़ाएं, और उनमें धरती की उपज अन्य में बांट कर प्रयोग करने का गुण आए ताकि सर्व को आत्म-सन्तुष्टि हो।

सम्पादकीय

दृष्टि परिवर्तन

शिव बाबा ने ब्रह्मा बाबा द्वारा जो हमें ज्ञान दिया है, उसने सबसे पहले हमारी दृष्टि में परिवर्तन लाया है। दृष्टि परिवर्तन से ही हमारे मनोपरिवर्तन, व्यवहार परिवर्तन तथा जीवन परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई और हमारे व्यक्तिगत परिवर्तन द्वारा हमारे परिवार, समाज और विश्व के परिवर्तन की प्रक्रिया आगे बढ़ी। दृष्टि परिवर्तन (Change in perspectives) से हमारे बोध, हमारी समझ, हमारे विचारों, हमारी मान्यताओं और हमारे एहसासों (Perceptions) में परिवर्तन आया और वह परिवर्तन हमारे जीवन-परिवर्तन की पद्धति की बुनियाद बन गया। इसके कुछ उदाहरण दे देने से यह बात और अधिक स्पष्ट हो जाएगी।

बाबा द्वारा ज्ञान मिलने से पहले संसार के प्रति हमारा यह दृष्टिकोण था कि इसमें सुख और दुःख सदा एक-साथ चले आये हैं। अतः यदि हम धार्मिक साधना करते थे तो उसके पीछे हमारा यह भाव रहता था कि हमें इस दुःखमय संसार से मुक्ति मिल जाये। यदि हम कोई सामाजिक कार्य करते थे तो उसके पीछे हमारा यह भाव रहता था कि संसार में दुःख की कुछ तो कमी हो। गोया हमें इस बात का बोध अथवा इस बात की समझ ही नहीं थी कि यह संसार किसी समय पूर्णतः सुख, शान्ति सम्पन्न था और अब फिर भी इसे वैसा ही बनाया जा सकता है। यह एहसास (Perception) न होने से हम जीवन्मुक्ति के लिए अथवा सतयुगी देवताई जीवन के लिए तो कभी कोशिश ही नहीं करते थे। परन्तु दृष्टि परिवर्तन (Change in perspectives) ने हमारी मान्यता, हमारे बोध और हमारे एहसास (Perception) में परिवर्तन करके हमारे जीवन-परिवर्तन की प्रक्रिया को प्रारम्भ कर दिया। इसका फल यह हुआ कि हम अपने जीवन को दैवी जीवन बनाने में तथा विश्व को सतयुगी बनाने में लग गये और इस प्रकार हमने विश्व-परिवर्तन की श्रृंखला शुरू कर दी।

इसी प्रकार मानव-जीवन के बारे में पहले हमारा यह दृष्टिकोण बना हुआ था कि ब्रह्मचर्य आश्रम के बाद गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करना ही होता है और गृहस्थ में सम्भोग वर्जित नहीं है। हमारा ही नहीं, प्रायः हर मानव का यही दृष्टिकोण था और आज भी है कि सन्तानोत्पत्ति भी मानव-जीवन का एक आवश्यक कर्त्तव्य है। अतः गहस्थ जीवन को एक मर्यादित और नियमित जीवन की तरह चलाने का एहसास तो हरेक धर्म-परायण व्यक्ति के सामने रहता ही था परन्तु इस संसार के प्रति हमारा यह दृष्टिकोण तो था ही नहीं कि पूर्व काल में अर्थात सतयुग और त्रेतायुग में 'योगज' सृष्टि हुआ करती थी और तब गृहस्थ सही मानों में आश्रम था और तब पति पत्नि के सम्बन्धों में काम विकार का लेश भी नहीं था। जब शिव बाबा ने ब्रह्मा बाबा द्वारा नर-नारी के बीच के सम्बन्ध के प्रति हमारे इस दृष्टिकोण को परिवर्तित किया अथवा संसार और गृहस्थाश्रम के प्रति हमें नया दृष्टिकोण दिया, तभी हमें नया जीवन बनाने का एहसास (Perception) मिला और उस एहसास अथवा बोध की नींव पर हमने नई इमारत बनाना शुरू कर दिया। संसार में ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने वाले कुछ लोग पहले भी थे; परन्तु वे संसार को मिथ्या मानकर अथवा प्रवृत्ति का बहिष्कार करके संन्यस्त जीवन जीते थे। गोया संसार के प्रति उनका दृष्टिकोण यथा-तथ्य (Matter of Fact ; Realistic) नहीं था। और, वे कोई दिव्य संसार के जीवन के लिए पुरुषार्थ में तत्पर नहीं होते थे। परन्तु हमें जो दृष्टि कोण (Perspective) मिला, उससे यथार्थ बोध (right perception) हुआ और उससे सत्य-निष्ठ होकर हमने एक नये युग, नये समाज, नई मर्या-

दाओं और नये जीवन की नींव डालना शुरू कर दिया।

केवल काम विकार के बारे में ही नहीं, बाबा ने तो काल-चक्र के युग विभाग बताकर और संसार की चक्रिक गति (Cyclic movement) समझाकर, संसार के प्रति जो हमारा यह दृष्टि-कोण बना हुआ था, कि छः विकार (Six evils) तो यहाँ सदा ही से चले आये हैं, ही बदल दिया। इससे हमें यह एहसास हो गया कि ये मनोविकार हमारे दुश्मन हैं जबकि पहले हम यह समझते थे कि ये स्वाभाविक हैं। पहले यह दृष्टिकोण था कि ऋषि मुनि भी विकारों को नहीं जीत सके और कि जैसे तरलता पानी का गुण है, स्निग्धता घी की विशेषता है, उष्णता धूप की सहगामिनी है वैसे ही ये विकार भी संसार की रचना का एक अविच्छिन्न और अमिट अंग अथवा गुण है। परन्तु अब हमारा दृष्टिकोण यह हो गया है कि विकारों ने तो इस संसार को उजाड़ दिया है, इसे काँटों का एक जंगल बना दिया है, इसे दलदल में परिवर्तित कर दिया और हमें फिर से काँटों को फूल बनाना है, दलदल में कमल पुष्प के समान रहना है और संसार को फिर से हरा-भरा करना है क्योंकि पहले यह सदा-बहार फुलवाड़ी थी। जब से हमें यह दृष्टिकोण मिला कि एक वो संसार था जिसे स्वर्ग कहते थे और एक यह संसार है जिसे नर्क कहते हैं तब हमें बोध हुआ कि हम बदलेंगे और इस संसार को बदल कर रहेंगे। पहले हम यह समझते थे कि भगवान ने यह संसार बनाया है परन्तु जब हमें यह दृष्टिकोण मिला कि भगवान द्वारा बनाया गया संसार एक सुन्दर और सुख शान्ति मय सम्पन्न संसार है और वर्तमान संसार तो मनुष्य के अपने ही कर्मों द्वारा एक दूषित हुआ संसार है तो हमारे बोध में ऐसा परिवर्तन हुआ कि निराशा आशा में, उत्साह-हीनता उत्साह में और कर्त्तव्यविमुखता कर्त्तव्यपरायणता में बदल गई और हम अपने कर्मों को ठीक करते हुए चिर-कालीन स्वप्नों को साकार करने में लग गए।

एक और दृष्टान्त दे देने से यह बात और अधिक स्पष्ट हो जाएगी। पहले हम समझते थे कि अब कलियुग चल रहा है और कलियुग में तो सब अटपटी बातें, अनैतिकता और अनाचार होता ही है। भारत के अन्य सभी लोग भी प्रायः ऐसा ही मानते हैं। यदि किसी को यह देखकर कि हज़ारों की संख्या में एटम और हाइड्रोजन बम बन चुके हैं, यह विचार आता भी है कि ये तो बहुत विनाश-कारी हैं तो भी वे विनाश को इस दृष्टिकोण से नहीं देखते कि इन द्वारा कलियुग का अन्त होने वाला है और कि उससे पहले ही सतयुग का सूत्र-पात होना आवश्यक है। यह दृष्टिकोण न होने से भारत में तथा विश्व के अन्य देशों में इस होवनहार महाभारी महाविनाश से करोड़ों लोग डरते हैं परन्तु वे बदलते नहीं और अन्य बहुत से लोग डरते भी नहीं और बदलते भी नहीं बल्कि वे यह समझते हैं कि अगर विनाश होगा भी सही तो उससे पहले हमें खूब मौज मना लेना अच्छा रहेगा। और कि यह कैसे विश्वास से कहा जा सकता है कि इसका विनाश अवश्य ही होगा। इसके विपरीत हमारा अब यह दृष्टिकोण बन चुका है कि विनाश अवश्य होगा और कि कलियुग जा रहा है तथा सतयुग आ रहा है और परमपिता परमात्मा स्वयं अब सतयुग का सूत्रपात कर रहे हैं। इस दृष्टि परिवर्तन से ही हमारे एहसास में यह परिवर्तन आया है कि हमारा यह वर्तमान जीवन बहुत महत्त्वपूर्ण है और कि जबकि स्वयं भगवान हम पर वरदानों की वर्षा कर रहे हैं तब भी हम उसके अनमोल खज़ानों से वंचित रह जाते हैं तो यह हमारी अपरिवर्तनीय क्षति होगी और इसकी बजाय हमें दत्तचित्त होकर परमात्मा की मार्ग प्रदर्शना से स्वयं में परिवर्तन लाने का उत्कट यत्न करना चाहिए। "अब नहीं तो कभी नहीं"— ये जो एक धुन हमें लग गई है और जी-जान लगा-कर तथा सब कुछ न्योछावर करके जो हम इस कार्य क्षेत्र में कूद पड़े हैं, उसका कारण हमारा दृष्टि परिवर्तन ही है। हमारा यह जीवन साधारण

नहीं है—जब से यह दृष्टिकोण हमें मिला है तब से ही हमने इसे कौड़ी तुल्य से हीरे तुल्य बनाने का पुरुषार्थ प्रारम्भ किया है।

अत: यदि यह पूछा जाय कि ईश्वरीय ज्ञान का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है तो दो शब्दों में यह कहा जाएगा कि इससे मनुष्य का दृष्टिकोण बदलता है और उससे उसका बोध, उसका एहसास और उसके जज़बात परिवर्तित होते हैं। उससे उसकी चेष्टाएँ, आशाएँ, उसकी भाव-तरंगें, उसके विचार और विश्वास बदलने लगते हैं और परिवर्तन की इस प्रक्रिया से उसका सारा जीवन ही लौकिक से अलौकिक, तामसिक से सात्त्विक और अपवित्र से पवित्र बनने लग जाता है।

पिछले दिनों माउण्ट आबू में ६ से १३ फरवरी तक जो विश्व शान्ति महासम्मेलन हुआ, उसका मुख्य विषय 'परिवर्तन' (Transformation) ही था। उसमें अनेक सत्रों में यही बताया गया कि कैसे दृष्टि बदलने से सृष्टि बदलती है। उस सम्मेलन में विश्व छ: मुख्य समस्याओं को लेकर उन पर लिखे सात की अभिलेखों का एक संग्रह भी सबके सामने रखा गया। इसमें 'विश्व शान्ति योजना' (Peace plan) पर प्रकाश डालते हुए यह बताया गया था कि कैसे ये समस्याएँ मनुष्य में दृष्टि परिवर्तन होने से अन्त हो सकती हैं। सबसे पहले तो इन ६ मुख्य समस्याओं के बारे में समुचित दृष्टिकोण पेश किया गया ताकि ये मालूम पड़ें कि इनका मूल कारण क्या है। इन ६ समस्याओं के नाम ये हैं—मानसिक तनाव—इसमें बताया गया था कि इससे दमा, कैन्सर, ट्यूमर, अल्सर आदि-आदि जैसे रोग ही नहीं होते बल्कि समाज में जो अपराध होते हैं, लड़ाइयाँ होती हैं, ग़लत निर्णय होते हैं, उनका भी मूल कारण प्राय: मानसिक तनाव ही होता है। अगर कोई उद्योगपति मानसिक तनाव में कोई गलत निर्णय ले ले तो उसके परिणामस्वरूप हड़ताल हो जाने से उसे लाखों-करोड़ों रुपयों की क्षति हो सकती है। किसी देश का नेता मानसिक तनाव में कोई घोषणा कर दे तो देश में उथल-पुथल हो सकती है। परन्तु आज यद्यपि डाक्टर लोग मानसिक तनाव को कोई रोगों का कारण बताते हैं परन्तु मानसिक तनाव के आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक दुष्परिणाम हैं, वे लोगों के सामने ठीक रीति से नहीं रखे गये वर्ना तो ये संसार की सभी समस्याओं यहाँ तक कि जनसंख्या में वृद्धि तथा द्रव्य प्रयोग (Drug Addiction) का भी एक कारण है। अत: इसे मानव का शत्रु मानकर इसका पूर्णत: बहिष्कार करना चाहिए।

इसी प्रकार इसमें निर्धनता, आणविक अस्त्रों की दौड़ द्वारा अशान्ति, जनसंख्या में तीव्र गति से होती हुई अति वृद्धि पर भी अभिलेख पेश किये गए थे और साथ-साथ दो लेख इस विषय पर थे कि मनोपरिवर्तन अथवा व्यक्तित्व-परिवर्तन (Personality Transformation) का क्या भावार्थ है और हमारा व्यक्तित्व समायोजित (Integrated), संतुलित (Balanced) और शान्त एवं निर्द्वन्द्व (Harmonious) कैसे बने। इनके अतिरिक्त एक लेख इस विषय पर भी था कि युवा पीढ़ी इस युवा वर्ष में तथा बाद में भी क्या रचनात्मक कार्य करे तथा अपनी प्रवृत्तियों को किस कार्य में लगाए।

—जगदीश

पत्रिका का नाम	—	—	ज्ञानामृत
अवधि	—	—	मासिक
सम्पादक व प्रकाशक	—	—	ब्र० कु० आत्म प्रकाश
मुख्य सम्पादक	—	—	जगदीशचन्द्र हसीजा
स्थान	—	—	बी० ६/१६ कृष्णा नगर, दिल्ली-५१

अच्छी आदतों को जागृत करने का साधन–राजयोग

एम० एच० बेग

माउण्ट आबू ९ फरवरी, ८५—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित तृतीय विश्व शान्ति सम्मेलन का प्रथम दिवसीय मांगलिक समारोह एवं ध्वजारोहण समारोह यहाँ भव्यतापूर्ण वातावरण में ओम शान्ति भवन के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम संस्था की मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणी जी ने शिवध्वज का आरोहण मधुर-मधुर संगीत की ध्वनियों एवं शिवस्वागत गीत के बीच अनेक प्रतिष्ठित प्रतिनिधियों ने समारोह में भाग लिया। इसके पश्चात् अधिवेशन प्रारम्भ हुआ।

अधिवेशन में बोलते हुये भारत के उच्चतम न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधिपति एवं वर्तमान में भारत सरकार के अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष महामहिम मिर्ज़ा हबीबुल्लबेग ने अपने भाषण में ज़ोरदार अपील करते हुये विश्व के लोगों का आह्वान किया कि आज यदि विश्व शान्ति की ओर गम्भीरता पूर्वक कदम न उठाया गया तो निश्चय ही ये भयंकर अणु-आयुध कुछ ही घण्टों में इस सारे विश्व का एक बार नहीं बल्कि ९० बार खात्मा कर डालेंगे। इसलिये दुनिया को इस विनाश के खौफनाक हादसे से निकालने हेतु विश्व शान्ति की शक्तियों को एकजुट होकर कारगर कदम उठाना ही होगा नहीं तो सारी जानदार नस्लें समाप्त हो जायेंगी, यह दुनिया एक जंगल बन कर रह जायेगी। इसलिये आज आवश्यकता इस बात की है कि हम सब जंगलीपन छोड़कर एक दूसरे से लड़ाई झगड़ा वैमनस्य छोड़कर भाई-चारे एव प्रेम का वातावरण बनाएं एवं धर्मों की संकीर्णता छोड़कर हम सब एकमत हों और मानवकल्याण के लिये कार्य करें। जस्टिस बेग ने कहा कि मुझे हर्ष है कि ब्रह्माकुमारी बहनें इसी आध्यात्मिक सर्वधर्म की भावना को लेकर विश्व-शान्ति का कार्य कर रही हैं। इसलिये इस महान कार्य में हम सब उनके समर्थक एवं सहयोगी हैं। क्योंकि आज की दुनिया का सवाल मतभेदों का नहीं है वरन् मनुष्यों को भावी विनाश से बचाने का है। ब्रह्माकुमारी बहनों ने ईश्वर की व्याख्या सर्व आत्माओं के पिता एक ज्योतिबिन्दु के रूप में की है जो सर्वधर्म वाले मानते हैं।

जस्टिस बेग ने अनुभव सुनाते हुये कहा कि उन्होंने यहाँ की राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी शीलू बहिन से राजयोग की शिक्षा ग्रहण की है जो पूर्ण वैज्ञानिक एवं सही है। उन्होंने आगे कहा कि मैंने भगवद्-गीता का भी गहन अध्ययन किया है उसमें भी कर्मयोग एवं राजयोग की बातें हैं, वही बातें ये बहनें बता रही हैं। दया, क्षमा, करुणा, प्रेम का भाव कुदरत का कानून है। यह हर व्यक्ति में है लेकिन वह अज्ञानता के कारण इन अच्छी आदतों को भूलकर जंगलीपन में आ जाता है। उन अच्छी आदतों को जागृत करने का साधन ही राजयोग है। कोई धर्म मानवता के विरुद्ध बातें नहीं सिखाता है। 'मुक्ति, जीवन मुक्ति हमारा ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है यह ब्रह्माकुमारियों का नारा मुझे बेहद पसन्द आया है क्योंकि यह मानव को प्रेम की तरफ ले जाने वाला है। ये बहनें घृणा एवं द्वेष से हटाकर सभी को प्रेम की शिक्षा दे रही हैं, भाई-चारा सिखा रही हैं। इससे सम्बन्धों में पवित्रता आयेगी। क्योंकि आत्मिक उन्नति ही सच्ची उन्नति है। मौखिक उन्नति किसी को सुख, शान्ति नहीं दे सकती है। जस्टिस बेग ने दार्शनिक सुकरात का उद्धरण देते हुए कहा कि प्रेम मनुष्य एवं परमात्मा को जोड़ने की कड़ी है। ब्रह्माकुमारी बहनें प्रेम की प्रतिमूर्ति हैं, इसलिये ये परमात्मा से जोड़ने में सहयोगी हैं। क्योंकि कोई भी बुद्धिमान मानव यह

भलीभाँति जानता है कि सारा विश्व प्रेममय है, जहाँ प्रेम नहीं वहाँ मनुष्य रह नहीं सकता। प्रेम से जीवन में पवित्रता आती है, इसलिये ईसा मसीह ने भी 'ईश्वर, प्रेम है', कहा है। महात्मा गाँधी ने भी सत्य, अहिंसा एवं प्रेम का ही पाठ पढ़ाया है। हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ० राधाकृष्णन ने भी अपनी एक पुस्तक में कहा है कि जिस दिन मनुष्य के अन्दर से प्रेम समाप्त हो जायेगा उस समय यह विश्व समाप्त हो जावेगा। इसलिये आज भाई-चारे एवं प्रेम की आवश्यकता है, वह यह ब्रह्माकुमारी बहनें निःस्वार्थभाव से विश्व की आत्माओं को दे रही हैं। यह हमारे भारत की सांस्कृतिक परम्परा रही है कि हमने विश्व की अनेकों संस्कृतियों को अपनी संस्कृति में मिला लिया, जिन्होंने कभी हमारे ऊपर आक्रमण भी किये थे। आज सारा विश्व पुनः शान्ति के लिये भारत की ओर निहार रहा है और मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि सारे विश्व को शान्ति एवं प्रेम का सन्देश हमारी ये ब्रह्माकुमारी बहनें ही प्रदान करेंगी।

"आध्यात्मिक क्रान्ति की दिशा में अगर कभी इतिहास लिखा जायेगा तो सबसे पहला नाम ब्रह्माकुमारियों का ही होगा !"

मांगलिक अधिवेशन में अपने विचार व्यक्त करते हुये यूनिवर्सल सनातन धर्म फाउण्डेशन के अध्यक्ष एवं विश्व धर्म संसद के अधिष्ठाता आचार्य प्रभाकर मिश्र ने अपने ओजस्वी एवं विवेचनापूर्ण व्याख्यान में बताया कि आज तक विश्व में जितने भी विश्व शान्ति के लिये प्रयास किये गये हैं उनमें प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित विश्वशान्ति सम्मेलनों का प्रभाव ही प्रमुख रहा है। क्योंकि अन्य सम्मेलन निश्चय ही किसी न किसी स्वार्थ-भाव से प्रेरित रहे हैं लेकिन ये बहनें सच्चे दिल से समर्पणभाव से प्रेमपूर्वक विश्व शान्ति के कार्य में तन्मयता से लगी हैं। इन बहनों की कथनी एवं करनी में सामंजस्य है इसीलिये इनके प्रयासों का अन्यों पर भी प्रभाव पड़ रहा है। आचार्यजी ने एक पौराणिक कथा का उद्धरण देते हुये बताया कि एक बार अगस्तमुनि इस अरावली पहाड़ पर आये, उस समय यह पर्वत अहंकारभाव से सीधा तना हुआ खड़ा था। अगस्तमुनि को देख कर पर्वत दण्डवत प्रणाम की मुद्रा में उनके सामने नत-मस्तक हुआ, तब अगस्तमुनि ने पर्वत को आश्वस्त किया कि कभी स्वयं शिव भगवान का तेज यहाँ आयेगा जो तुम्हारा प्रणाम सार्थक करेगा। वह पौराणिक कथा आज सत्य सिद्ध हो रही है। क्योंकि हमारी ब्रह्माकुमारी बहनें परमपिता परमात्मा शिव का ही सत्य परिचय एवं ज्ञान दे रही हैं। यही नहीं उपनिषदों में जो ज्योतिर्लिंगम की बात कही गयी है उसको समाज नहीं जानता कि वह ज्योतिर्लिंगम क्या है? लेकिन उसका सही अर्थ यह ईश्वरीय विश्वविद्यालय ही बता रहा है कि वह ज्योतिर्लिंगम स्वयं परमात्मा शिव ही है क्योंकि वेदों में भी शिव के समर्पण होने की बात कही गयी है जिसका रचनात्मक पक्ष ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय है।

इन्डोनेशिया के प्रसिद्ध विचारक मासआजुंग अलहाजी ने अपने वक्तव्य में बताया कि इन्डोनेशिया में अनेक जाति धर्म एवं सम्प्रदाय के लोग रहते हैं लेकिन उसमें आपस में प्रेम एवं एकता है, सामाजिक न्याय है क्योंकि हमने भारत के पंचशील के सिद्धान्त को पहले से ही स्वीकार किया है। इस विश्व शान्ति सम्मेलन से भी हम कुछ नये विचार एवं विश्व शान्ति के सन्देश तथा ईश्वर के दिव्य प्रकाश को लेकर अपने देश में जायेंगे। उन्होंने अपने देश की तरफ से कांफ्रेंस के लिये शुभ कामनाएं प्रेषित की।

कैन्टनवरी के प्रसिद्ध लेखिका मिसेज डॉ० एस्टर डिवाल ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि पूर्व, पूर्व है और पश्चिम-पश्चिम है ये दोनों कभी नहीं मिल सकते, यह भावना लोगों में थी लेकिन आज मैं इस विश्व शान्ति सम्मेलन में देख रही हूँ कि पूर्व एवं पश्चिम के सभी लोग एक साथ बैठकर विश्व शांन्ति की

(शेष पृष्ठ १० पर)

विश्व शांति महासम्मेलन का उद्घाटन भारत के उप-राष्ट्रपति महामहिम आर० वेंकटरमण द्वारा सम्पन्न

माउण्ट आबू, १० फरवरी—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित तृतीय विश्व शान्ति महासम्मेलन का उद्घाटन ओम शांति भवन के विशाल सभागार में भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम आर० वेंकटरमण के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। अपने उद्घाटन भाषण में महामहिम उपराष्ट्रपति ने कहा कि मुझे हर्ष है कि यह तृतीय विश्व शांति महासम्मेलन दिल्ली में आयोजित ६ राष्ट्रों के ऐतिहासिक सम्मेलन के कुछ ही दिनों बाद यहाँ माउण्ट आबू में आयोजित किया जा रहा है जिसमें विश्व के कोने-कोने से पधारे प्रतिनिधि विश्व शांति की समस्या पर विचार विमर्श करेंगे। उपराष्ट्रपति ने बताया कि दिल्ली घोषणा पत्र में जिन बातों पर विचार विमर्श किया गया उनमें से मुख्य था कि उन बड़ी शक्तियों से जोरदार अपील की जाये कि वे विनाशकारी अणु-अस्त्रों को नष्ट कर दें, आगे न बनावें, एवं इनके द्वारा भय का वातावरण पैदा करके विश्व में तनाव पैदा न करें। जो करोड़ों, अरबों रुपया इनके बनाने में खर्च किया जा रहा है उसे विश्व से गरीबी, बीमारी, अज्ञान को समाप्त करने पर खर्च किया जाये। इस दिल्ली घोषणा-पत्र में यह भी है कि विश्व में निशस्त्रीकरण के लिये जनमत तैयार किया जाये, जो बड़ी शक्तियों पर दबाव डाले कि वे विनाशकारी अणु-आयुधों पर रोक लगाये। जो भय से, सन्देह से सन्तुलन बनाने की कोशिश बड़े देश कर रहे हैं उस भय से मुक्त होकर प्रेम एवं आपसी स्नेह से सन्तुलन बनाया जाये।

उपराष्ट्रपति महोदय ने इस क्षेत्र में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की सराहना करते हुये कहा कि यह संस्था इस क्षेत्र में महान कार्य कर रही है। संस्था ने १९८३, १९८४ में तथा अब १९८५ में विश्व शान्ति सम्मेलन आयोजित करके विश्व शान्ति के लिये अच्छा जनमत तैयार किया है। उन्होंने कहा कि हमारे देश की परम्परा ही है 'विश्व वन्धुत्व' एवं 'सर्वे भवन्तु सुखिना, 'सर्वे-सन्तु निरामया, सर्वे पश्यन्ति भद्राणी मां कश्चिद भवेद दुखिना'—यह भावना हमारे देश की है जिसे ब्रह्माकुमारी बहनें सारे विश्व में फैला रही हैं। क्योंकि भौतिक रूप से तो विश्व काफी आगे बढ़ गया है लेकिन आध्यात्मिक रूप से खोखला हो गया है। यही कारण है कि मनुष्य की बुद्धि विकारों के कारण नष्ट हो गयी है इसीलिये अपने ही विनाश की तैयारी कर ली है।

तृतीय विश्वशान्ति सम्मेलन के महासचिव ब्र० कु० निर्वैरजी ने इस सम्मेलन के लिये विश्वभर के विशिष्ट महानुभावों, राष्ट्राध्यक्षों, जिनमें भारत के प्रधानमंत्री, मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रमुख हैं की शुभकामनायें जो प्राप्त हुयी हैं, पढ़ कर सभा में सुनाईं। सुप्रीम कोर्ट के विख्यात अधिवक्ता नानीपालकीवाला ने अपना सन्देश विश्व शांति के लिये दिया और इस महान कार्य की सफलता की शुभकामनायें की। भारत स्थित ग्याना के उच्चायुक्त भ्रा० स्टीवनारायण एवं महामहिम लार्ड कार्डेन जो कि यू० के० के पूर्व विदेश मन्त्री तथा संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रतिनिधि रह चुके हैं ने भी शुभकामनाएँ दीं।

राष्ट्रीय गीत बजाया गया। राजयोग की क्रिया-अनुभूति न्यूयार्क से पधारी ब्रह्माकुमारी मोहिनी बहिन ने कराई। उपराष्ट्रपति की धर्मपत्नि जानकी वैंकटरमन भी उपस्थित थीं। सभा का संचालन ब्रह्माकुमार बृजमोहन जी ने किया।

○

कानून एवं प्रेम पुनर्निर्माण के उपकरण

माउण्ट आबू, १० फरवरी ८५—विश्व शान्ति सम्मेलन में न्यायविदों के लिये आयोजित कार्य-शाला में "प्रेम और कानून-विश्व परिवर्तन के उपकरण" विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुये गुजरात उच्च न्यायालय के न्यायाधीश ए० एल० कुरेशी ने कहा कि जब परिवर्तन की बात आती है तो प्रश्न उठता है कि क्या मनुष्य का स्वभाव बदल सकता है ?

उन्होंने कहा कि पुराने समय से एक धारणा सी बनती आ रही है कि, मानव का स्वभाव उसकी मृत्यु के साथ ही समाप्त होता है। लेकिन जब प्रेम तथा कानून दोनों का संगम होता है तो असम्भव बात भी सम्भव हो जाती है।

भ्राता कुरैशी ने कहा कि प्रत्येक समाज और व्यवस्था के प्रतीक नियम होते हैं जिनका पालन करना जरूरी होता है उसी प्रकार आध्यात्मिक नियम भी हैं। जहां प्रेम की बात चलती है तो पति-पत्नि के सम्बन्ध भी अवश्य सामने आते हैं जो वास्तव में वह कामवासना तक ही सीमित हैं। बहन-भाई का स्थूल प्यार सम्बन्धों पर है। लेकिन आत्मा का परमात्मा के साथ सम्बन्ध वास्तविक सम्बन्ध है जो परिवर्तन की शक्ति रखता है।

अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष एवं उच्चत्तम न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश एम० एच० बेग ने इस सेमीनार को सम्बोधित करते हुए कहा कि प्रेम के कारण संवैधानिक नियम इतने अधिक शक्तिशाली बन जाते हैं कि उनके आचरण के लिये मानव को बहुत अधिक मेहनत नहीं लगती। उन्होंने कहा कि प्रेम में वह भारी शक्ति है जो परमात्मा सर्वज्ञ से हम आत्माओं तक आती है।

विख्यात न्यायविद् नानीपालकीवाला ने कहा कि प्रेम और परिवर्तन दोनों हो एक दो के कारण और परिणाम बन सकते हैं। उन्होंने कहा कि नियम तब तक परिवर्तन का आधार नहीं बन सकते जब तक उसके निर्माता और पालनकर्ता स्वयं में परिवर्तन नहीं लाते। नियम वर्तमान में सभी जगह अलग-अलग हैं जहां एक नियम कुछ ठीक लगता है वही उसका दूसरे स्थान पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। पालकीवाला जी ने कहा कि जो नियम परिवर्तनशील हैं वे कभी परिवर्तन का आधार नहीं बन सकते।

सिडनी के ब्र० कु० मार्ग्रेट ने कहा कि परि-वर्तनशील दोनों ही में आपसी सामंजस्य होना जरूरी हैं। चाहे वह समाज, संस्था या कोई व्यक्ति हो। उन्होंने कहा कि स्वाभिमान से जो प्यार जागृत होता है वह स्वपरिवर्तन का आधार बनता है।

महिलाओं में जागृति से ही विश्व में जागृति आयेगी

माउन्ट आबू १० फरवरी—विश्व शान्ति महा-सम्मेलन में आज महिलाओं के लिये आयोजित कार्यशाला में विश्वभर से पधारी विशिष्ट महिलाओं ने "महिलाओं की जागति से संसार में जागृति आयेगा" विषय पर गहन विचार विमर्श किया। इस अवसर पर देहरादून की राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी प्रेम बहिन ने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि जब तक नारी में चेतना नहीं आयेगी तब तक विश्व में चेतना, जागृति नहीं आ सकती है। जागृति का अर्थ यह नहीं कि समाज में हो रही भौतिक प्रगति का ही अन्धा अनुकरण किया जाये। स्वतंत्रता का अर्थ है निर्माण और

निर्माण तब ही होगा जब नारी अपने स्वत्व को पहिचानेगी। केवल दृढ़ संकल्प की शक्ति से ही वह अपने आपको पहिचान सकती है। स्वधर्म, स्वकर्म, स्वरूप, स्वलक्ष्य, स्वलक्षण, स्वदेश को जानने के बाद नारी महान बन जाती है, दिव्य बन जाती है। नारी ही मां है, नारी ही बहिन है, नारी ही सहधर्मिणी है तो नारी में जागृति आते ही नारी की सन्तान नर में महान परिवर्तन आयेगा और विश्व परिवर्तन आयेगा।

बहिन बेटीनारायन ने अपने विचार कार्यशाला में व्यक्त करते हुये कहा कि नारी जागृति के लिये तीन शक्तियों का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रथम—संरचना की शक्ति, दूसरी टूटे हुये सम्बन्धों को जोड़ने की शक्ति और तीसरी मार्ग-दर्शन की शक्ति। इन तीनों ही शक्तियों से नारी परिवार में, समाज में एवं विश्व में परिवर्तन ला सकती है।

बहिन शकुन्तलाजी ने अपने प्रवचन में बताया कि शान्ति एवं स्नेह की शक्ति केवल परमात्मा की याद से ही प्राप्त कर सकते हैं। शिव बाबा ने यह महान कार्य प्रजापिता ब्रह्मा को सौंपा और ब्रह्मा बाबा ने भी नारी को अग्रणी बनाया तो हमें भी नारी को सम्मान देना होगा। जहाँ नारी की इज्जत होती है वहाँ सुख शान्ति, सम्पत्ति आती है, देवत्व आता है।

सभा की अध्यक्षा ब्रह्माकुमारी सुदेश बहिन ने सभी के विचारों को व्यवस्थित करते हुये अपने निष्कर्ष प्रस्तुत किये कि नारी को अपने जीवन में प्रेम एवं नियम का सन्तुलन रखना चाहिये। उसे बाहरी देहभान के भटकाव से दूर हटकर आत्मा के सच्चे गुणों में टिककर राजयोगी बनना चाहिये, तब ही स्वपरिवर्तन से नारी विश्व परिवर्तन कर सकती है क्योंकि अच्छे विचार अच्छी वाणी और कर्त्तव्य ही शान्ति की सच्ची परिभाषा हैं।

संचार माध्यमों की दूरी की समाप्ति से ही मानव परिवर्तन एवं विश्व परिवर्तन तथा विश्व शान्ति

माउण्ट आबू १० फरवरी—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विश्वशान्ति सम्मेलन के द्वितीय दिन 'संचार माध्यमों की दूरी को मानसिक स्तर पर कैसे भरा जाय' विषय पर हुयी कार्यशाला में अपने विचार व्यक्त करते हुए दैनिक ट्रिब्यून के सम्पादक भ्राता राधेश्याम शर्मा ने बताया कि विचारों का मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। मन के प्रभावित होने से ही वह वैसे कार्य करने लगता है और कर्म ही फिर वैसे वातावरण का सृजन करते हैं। भ्राता शर्मा ने कहा कि माहौल ही व्यक्ति अच्छा बनाता है। बुरे संग से वही व्यक्ति डाकू भी बन सकता है। अच्छा महौल, अच्छे विचार अच्छे साहित्य से प्राप्त होते हैं और इसमें संचार माध्यमों का बहुत महत्व है।

आपने कहा कि रिपोर्टर वैसी रिपोर्ट लिखेगा जैसा उसके समक्ष उद्देश्य होगा। यदि उसका उद्देश्य अच्छा है, फैलाने वाला होगा तो अच्छी बातें फैलायेगा। यदि रिपोर्टर का स्वयं का मानस सनीसनीखेज होगा तो बुरी बातें फैलायेगा, समाज में अशान्ति पैदा करेगा। हिटलर युद्ध की कहानी पढ़ते-पढ़ते योद्धा बन गया। अतः यदि लोग ईर्ष्या, द्वेष, स्पर्धा समाप्त कर एक धारा में चलना शुरू कर दें, दिल, दिमाग में अच्छे संस्कार भरें तो निश्चय ही विश्व में झगड़े मिटेंगे। यह तभी होगा जब आपसी स्तर पर दूरी कम हो, विश्वास बढ़े और यह सिर्फ धार्मिक, आध्यात्मिक विचारों द्वारा ही किया जा सकता है।

भारत रत्न के सम्पादक भ्राता टी० एम० रामचन्द्रन ने कहा कि पत्रकार वही लिखते हैं जो

अक्सर उनके मालिक चाहते हैं, किन्तु अच्छे पत्रकार को चरित्रवान होना चाहिये। उसे मानव कल्याण के हित में कलम उठानी चाहिये। आज सिनेमा और पत्र, पत्रिकाएँ मनुष्य के अन्दर बुराईयों का नशा चढ़ाने में अफीम का कार्य कर रही है। इससे विश्वास की जगह संदेह, सद्भाव की जगह अहंकार और सहयोग के बजाय शोषण बढ़ रहा है, यही अशान्ति का कारण और आधार है। यदि हमें शान्ति की स्थापना करनी है तो शुद्ध विचार, शुद्ध संकल्प और शुद्ध उद्देश्य रखने होंगे, इसके लिये खान-पान की शुद्धि, आचार-विचार की शुद्धि और विश्वास, प्रेम, दैवी गुणों का अपने आप में समावेश करना आवश्यक है जो राजयोग से प्राप्त हो सकता है।

भ्राता गोविन्दलाल, सम्पादक 'अमृत सन्देश रामपुर' ने कहा कि पत्रकार समाज का नेतृत्व करते हैं। समाचार पत्र समाज का दर्पण होते हैं। जैसा समाज में होता है, वैसा उसमें छपता है। डाकू डाके डालता है तो डकैती के समाचार छपते हैं, समर्पण करता है तो आत्मसमर्पण के। किन्तु संचार की दूरी अच्छी बातों को उनकी नजर तक नहीं आने देती, हमें उसे दूर करना है। बुरे प्रचार के भय से बुराईयों को छुपाना नहीं है। इससे संदेह बढ़ता है और उस बुराई का दूना रूप बन सकता है। अतः संचार माध्यमों की दूरी कम करनी चाहिये।

लन्दन से आये पब्लिक रिलेशन ऑफिसर मिस्टर माइके जार्ज ने कहा कि हम और आप सभी मीडिया हैं। व्यक्ति को बाह्य विचार ही नहीं आन्तरिक रूप से विचारों को शुद्ध रखना है। हमारे अन्दर बुरी भावना नहीं होगी तो हमें बुराईयाँ नहीं दिखेगीं। अच्छायी पर शीघ्र नजर जायेगी।

इसके अतिरिक्त अन्य वक्ताओं ने भी विचार प्रकट किये। विवेकपूर्ण प्रश्नोत्तर हुए जिनका निष्कर्ष यही निकला कि संचार माध्यमों की दूरी को समाप्त करके ही विश्व परिवर्तन एवं मानव परिवर्तन करके ही विश्व में शान्ति और समभाव स्थापित किया जा सकता है। इस कार्यशाला का संयोजन ब्र० कु० भ्राता बृजमोहनजी, सम्पादक प्योरिटी दिल्ली ने किया।

अच्छी आदतों को जागृत··· (पष्ठ ६ का शेष)

समस्या पर गम्भीरता से विचार कर रहे हैं। इन बहनों ने देश, धर्म एवं संकीर्णता की दीवारें तोड़ कर सारे विश्व को विश्व बन्धुत्व की प्रेम एवं सौंदर्य की भावना में बांधा है।

झांसी के बिशप फैड्रिक डीसूजा ने अपनी शुभ भावनायें प्रेषित करते हुये बताया कि सारा विश्व आज शान्ति के लिये छटपटा रहा है इसलिये एक विश्व परिवार एवं विश्व पिता की भावना से हम सभी को मिलजुल कर इस विश्व परिवार को होवनहार विनाश से बचाना है, इसके लिये हमें आपसी स्वार्थ एवं संकीर्णता को छोड़कर हरेक के प्रति शुभ भावना एवं सद्भावना रखनी होगी।

स्वागत भाषण में ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सहमुख्य प्रशासिका दादी जानकी जी ने सभी का हार्दिक स्वागत करते हुये ओम शान्ति का भावार्थ बड़े विवेकपूर्ण तरीके से समझाकर एवं विश्व शान्ति के स्थापक परमात्मा शिव की स्मति में इस महान कार्य की सफलता की कामना की।

समारोह की अध्यक्षता दिल्ली जोन की प्रभारी ब्रह्माकुमारी हृदयमोहिनी जी ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि सबसे बड़ा आशीर्वाद तो हमें स्वयं परमपिता परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु शिव का ही मिला है जो बाप-टीचर-सतगुरु के रूप में हमें विश्व शान्ति के शुभ कार्य को सम्पन्न करने के लिये शुभाशीर्वाद दे रहे हैं।

ईश्वरीय विश्व विद्यालय के जन सम्पर्क अधिकारी ब्रह्माकुमार करुणा जी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। सभा का संचालन अहमदाबाद की राजयोग शिक्षिका ब्र० कु० चन्द्रिका बहिन ने किया।

अन्ध विश्वासों एवं विचारधाराओं में परिवर्तन द्वारा ही विश्व शान्ति सम्भव है

माउण्ट आबू ११ फरवरी—विश्व शान्ति सम्मेलन में खुले अधिवेशन में अपने गंभीर चिन्तन युक्त विचार व्यक्त करते हुये "भारत निर्माता" संघ के संयोजक भ्राता एम० सी० भण्डारीजी ने कहा कि आज विश्व के कोने-कोने से परिवर्तन की आवाज आ रही है। यह परिवर्तन आखिर कौन-सा परिवर्तन है ? सत्ता अथवा व्यवस्था का नहीं बल्कि विचारधाराओं का, आचरण का, धारणा का परिवर्तन है। यदि अच्छे विचार होंगे, आचरण शुद्ध होंगे तो उद्देश्य भी शुद्ध होंगे और शुद्ध एवं पवित्र कल्याणकारी लक्ष्य लेकर जो कुछ करेंगे वह कल्याणकारी शान्ति स्थापक ही होगा। आज इसी परिवर्तन की आवश्यकता है। यह परिवर्तन जन-जन में करना है, समाज को बदलना है, देश और विश्व के चरित्र का पुनः निर्माण करना है। जीवन में अंधविश्वास और रूढ़िवाद प्रगति का मार्ग अवरुद्ध करता है। हमें ज्ञान की सीढ़ी पर यदि बढ़ना है तो उन्हें छोड़ना होगा, व्यवहार में क्रियात्मक एवं रचनात्मक परिवर्तन लाना होगा और यह आत्मचिन्तन तथा योग-शक्ति से ही सम्भव है।

संसद सदस्य (राज्य सभा) भ्राता बी० सत्य नरायन रेड्डी ने भी विश्व शान्ति के लिए कर्म अर्थात् कार्यों में महानता लाने की बात कही और इस दिशा में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा किये जा रहे प्रयासों की सराहना की। आपने कहा कि आज बाह्य नहीं आन्तरिक शान्ति की जरूरत है। जब आन्तरिक रूप से मन शान्त हो जायेगा और मन से जन-जन शान्त होगा तो विश्व में शान्ति स्वतः स्थापित हो जायेगी। अतः इस विश्वविद्यालय के नारे "पवित्र बनो" "राजयोगी बनो" को हर व्यक्ति अपने आचरण में उतारे, जीवन में ढाले तभी यहाँ आने का लक्ष्य पूरा होगा।

बहिन ब्रह्माकुमारी उषा ने बताया कि हम सब आत्माएँ और आत्मा का रूप शान्तिस्वरूप है, तब मात्र शारीरिक कारणों से हम अशान्त क्यों हैं ? आज विश्व में जहाँ भी झगड़े हैं, कलह है अथवा विरोध है उसका कारण स्पर्धा, स्वार्थ एवं दैहिक अभिमान और अधबीच की भावना है। जबकि आत्मा इससे पृथक् समरूप है, यह सभी दुर्गुण शारीरिक अथवा दैहिक हैं। जब हम इस अर्थ को, रहस्य को समझ लेंगे, आत्मज्ञान की अनुभूति कर लेंगे तो हमारा स्वरूप, हमारा मन, स्वतः बदल जायेगा। आत्मा-आत्मा भाई-भाई की भावना से संसार में विश्व बंधुत्व पैदा हो जायेगा। अतः हमें स्वयं को आत्मारूप में समझना है और मात्र समझना ही नहीं व्यवहार में लाना है। यदि व्यवहार में ले लिया तो यह दृढ़ सत्य है कि विश्व में परिवर्तन होगा और शान्ति स्थापित होगी।

मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए यूनाईटेड किंगडम के भूतपूर्व विदेशमंत्री एवं संयुक्त राष्ट्रसंघ के यू० के० के प्रतिनिधि लार्ड कैरीडन ने कहा कि विश्व शान्ति में व्यक्ति को महत्व दें क्योंकि विश्व की ईकाई व्यक्ति है। अतः हर व्यक्ति को व्यक्तिगत स्तर पर परिवर्तन की जरूरत है। आपने कहा कि मैक्सिको के राजदूत ने निशस्त्रीकरण का प्रस्ताव रखा था। यू० एन० ओ० असेम्बली में सर्वसम्मति से उसे स्वीकार कर लिया गया। यही नहीं संयुक्त राष्ट्रसंघ भी विश्व शान्ति के लिये कार्य कर रहा है। आपने ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा इस दिशा में किये जा रहे कार्यों की सराहना की।

अन्त में विश्वविद्यालय कानपुर जोन की संचालिका ब्रह्माकुमारी दादी आत्म इन्द्राजी ने विश्व परिवर्तन के कार्य में ईश्वरीय योजना को विस्तारपूर्वक बताया कि स्वपरिवर्तन से विश्व परिवर्तन होगा। इस सभा का संचालन इन्दौर क्षेत्र के संचालक ब्रह्माकुमार ओमप्रकाशजी ने किया।

मानव सम्बन्धों में सामंजस्य लाने में पत्रकारों का योगदान

आबू पर्वत ११ फरवरी—विश्व शान्ति सम्मेलन में पत्रकारों एवं संचार माध्यम के लोगों के लिये आयोजित कार्यशाला में मानव सम्बन्धों में समाचार पत्र, पत्रकारों का योगदान विषय पर विचार विमर्श करते हुए लास एंजिल्स की टेलीविजन डायरेक्टर श्रीमती जोन ने विचार व्यक्त किये कि संचार माध्यमों के लोग भी समाज से ही आते हैं। अत: जैसा समाज होगा वैसे ही पत्रकार, डायरेक्टर, सम्पादक, प्रोड्युसर आदि होंगे, इसलिये सामाजिक परिवर्तन से ही सब बदलेंगे। लेकिन यह बात भी सत्य है कि समाज भी तो व्यक्तियों से ही बनता है पुन: समाचार माध्यमों द्वारा संचारित समाचारों का एक बहुत बड़े समुदाय पर अच्छा या बुरा प्रभाव पड़ता है, इसलिये माध्यमों को भी स्वीकारात्मक सद्भावनापूर्ण दृष्टिकोण रखकर सम्बन्धों में सामंजस्य पैदा करना चाहिये।

आगरा से प्रकाशित दैनिक विकासशील भारत के प्रधान सम्पादक एवं स्वामी भ्राता मनीरामजी अग्रवाल ने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि वातावरण का व्यक्ति पर बहुत प्रभाव पड़ता है। यहाँ माउण्ट आबू का शान्त वातावरण निश्चय ही एक मनोपरिवर्तन लाता है और मनुष्य को शान्ति प्रदान करता है। उन्होंने अपना निजी अनुभव व्यक्त करते हुये बताया कि पहले मुझे संस्था के बारे में सुनी हुई बातों से अनेक भ्रान्तियाँ थीं लेकिन आज इस विश्वशान्ति सम्मेलन में आकर मेरा भ्रम का पर्दा हट गया है। मुझे यहाँ आकर बहुत शान्ति प्राप्त हुई है। जहाँ तक विश्व शान्ति के सन्देश को फैलाने का प्रश्न है, हम अपने समाचार पत्रों द्वारा जन-जन को यह सन्देश अवश्य पहुँचायेंगे।

इन्दौर से प्रकाशित दैनिक नवभारत के सम्पादक भ्राता कमल दीक्षित ने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि आज मानव सम्बन्धों में कुछ उहापोह है। लोग समझते हैं कि समाज बहुत बिगड़ गया है, लोग बहुत खराब हो गये हैं, लेकिन यह तो सतही-रूप है। कई बार देखा है कि बहुत बुरे आदमी भी बहुत अच्छे बन जाते हैं। कई बार जो अच्छे होते हैं लेकिन बुरे समझे जाते हैं वे बहुत अच्छा कार्य करते देखे गए हैं। भोपाल गैस काण्ड में स्वयं सेवक संघ ने वह कार्य किया कि स्तुत्य है। उन पर सम्प्रदायिकत फैलाने का आरोप झूठा सिद्ध हो गया। इसका समाचार, समाचार माध्यम न देते तो अच्छाई सामने कैसे आती। समाचार पत्र यह सहयोग कर सकते हैं कि लोग आपसी झगड़े समाप्त करें और सद्भावशील बनें।

यूनीवार्ता के भ्राता जयवंशी झा ने कहा कि अपने सम्बन्धों में समझ-बूझ पैदा करने में समाचार पत्र बहुत बड़ा कार्य कर सकते हैं। समाचार पत्र कम्पयुटर की तरह मनुष्य के दिलों में घुसकर सद्भाव पैदा कर सकते हैं।

बैंगलोर "टाईम्स" के मुख्य उप-सम्पादक भ्राता चन्द्रशेखरराव ने कहा कि विश्वशान्ति सम्मेलन में भाग लेकर मैं यहाँ के शान्त, स्वच्छ वातावरण से बहुत ही प्रभावित हुआ हूँ। मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि शायद पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है। मैं अपने समाचार पत्र द्वारा मानव-सम्बन्धों में सद्भाव एवं विश्व शान्ति के लिये सदैव लिखता रहूँगा।

दैनिक हिन्दुस्तान दिल्ली के मुख्य उप-सम्पादक भ्राता कृष्णा वात्सायन ने कहा कि जो लोग पत्रकारिता को मिशन की बजाय व्यवसाय समझते हैं वही गलत पत्रकारिता करते हैं। मिशन की भावना वाला झूठी खबरें नहीं छापेगा। बिना पुष्टि किये छापी गयी खबरें अफवाहें ही होती हैं। मानवीय सम्बन्धों में सामंजस्य लाने में अखबार पूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, निभा रहे हैं।

(शेष पृष्ठ २३ पर)

महा-सम्मेलन के अन्तिम दिवस पर 'यूथ वर्कशाप' में दिल्ली की राजयोगा शिक्षिका, ब्र० कु० आशा अपने विचार प्रस्तुत कर रही हैं। मंच पर ब्र० कु० सुधा (शक्तिनगर-दिल्ली), इन्दौर राजयोगा सैन्टर की शिक्षिका ब्र० कु० किरण, बेलगांव में कृषि अधिकारी ब्र० कु० महादेव, तथा पंजाब विश्व-विद्यालय, चण्डीगढ़ में यूथवैलफयर के निर्देशक भ्राता आई० एस० ढिल्लन बैठे हैं।

'शिक्षाविदों के वर्कशाप' में 'शिक्षा में आध्यात्मिकता' विषय पर मोरक्को के राजदूत भ्राता लीखी मौलीन अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं। मंच पर लण्डन राजयोगा सैन्टर की ब्र० कु० मौरीन गुडमैन, लण्डन राजयोग सैन्टर की निर्देशिका ब्र० कु० जयन्ती आदि बैठे हैं।

'संचार साधन से सम्बोधित वर्कशाप' में लण्डन के 'इकोनोमिस्ट भ्राता गईडोन्सी, अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं। मंच पर 'प्योरिटी' के सम्पादक ब्र० कु० बृजमोहन, रायपुर के 'अमृत सन्देश' समाचार-पत्र के चीफ एडीटर एवं प्रोप्राईटर भ्राता गोविन्दलाल वोरा, सानफ्रांन्सिसको के 'इण्डिया वैस्ट' के डिप्टी एडीटर भ्राता राबर्ट शुबो तथा लण्डन के पब्लिक रिलेशन आफिसर भ्राता माईक जार्ज आदि बैठे हैं।

'शान्ति के लिये विज्ञान' विषय पर अहमदाबाद के ब्र० कु० मोहन सिंगल अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं। उनके दाईं ओर जर्मनी के प्रसिद्ध वैज्ञानिक तथा सोसाइन्स-टिट्यूट ऑफ ओरथोसोफी के चेयरमैन डा० वालटर ए० फ्रैंक तथा लण्डन के वैज्ञानिक ब्र० कु० नैंवेल होंडकिन्सन बैठे हैं। बाईं ओर जर्मनी में स्थित राजयोगा सैंटर की इन्चार्ज ब्र० कु० सुमन बहन बैठी हैं।

'डाक्टरस वर्कशोप' में मैसूर गवर्नमैन्ट कालेज की प्रोफेसर तथा एनोटोमी विभाग की अध्यक्ष बहन एस० कान्धा अपने विचार प्रस्तुत कर रही हैं। मंच पर बंगलौर के यूनानी इन्सटीट्यूट के निदेशक डा० चोपन मठ, बम्बई के डा० गिरीश पटेल, बम्बई के प्रसिद्ध डाक्टर व लेखक चन्द्रशेखर ठाकुर तथा आस्ट्रेलिया से डाक्टर निर्मला आदि बैठे हैं।

लातूर में केन्द्रीयमंत्री भ्राता शिवराज पाटिल को ब्र० कु० नीरा आत्म-स्मृति का सूचक तिलक लगा रही हैं।

'शिक्षा विदों के वर्कशाप' में गुजरात विश्वविद्यालय के उप-कुलपति भ्राता के० एस० शास्त्री अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं। मंच पर, केरल व तामिलनाडु सेवाकेन्द्रों की निर्देशिका ब्र० कु० रोजी तथा बम्बई सेवाकेन्द्र की राजयोग शिक्षिका ब्र० कु० योगिनी बैठी हैं।

जनजन को सन्देश देने हेतु शिव जयन्ति के महान पर्व पर कलकत्ता के मुख्य मार्ग से गुजरती हुई शोभा यात्रा का दृश्य। बाएं चित्र में ब्र० कु० निर्मल शान्ता सहायक प्रशासिका ब्र० कु० ई० वि० विद्यालय भी शोभा यात्रा में सम्मिलित होते हुए दिखाई पड़ रही हैं।

गाजीपुर में (फतेहपुर) में शिवजयन्ति के अवसर पर राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन स्थानीय जिला विद्यालय निरीक्षक, भ्राता राजबहादुर जी कर रहे हैं।

बरनाला की ओर से रनी गांव में प्रदर्शनी देखने के पश्चात् स्वामी महादेव गिरी को बृज बहन सौगात देते हुए।

ब्रह्मपुर में शिवजयन्ति महोत्सव के अवसर पर भाषण करती हुई ब्र० कु० नीलम जी।

आसाम-८५ प्रदर्शनी में भाग लेने पर आसाम के मुख्य मन्त्री की पत्नी, हेमलता सेकिया बहिन, ब्र० कु० सुमन को प्रमाण पत्र देते हुए।

आत्मा को कर्मेन्द्रियों का स्वामी बनाएं

माउण्ट आबू १० फरवरी, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विश्व शान्ति सम्मेलन के द्वितीय दिन वृहद राजयोग शिविर हिन्दी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए लखनऊ के फादर लयू यशूदा ने कहा कि हम सब आत्माएँ हैं और उस परमपिता की संतान हैं। ईसा मसीह ने भी यही कहा कि मैं स्वयं नहीं आया उस परमात्मा का सन्देश लेकर उसके मन की बात कहने आया हूँ। आज यहाँ की ब्रह्माकुमारी बहनें भी हमें उसी परमात्मा का सन्देश दे रही हैं। आज समय की माँग है—परिवर्तन। हमारे गिरजा-घरों में भी जागृति आयी है। आप भी जागें, कल्याण इसी में है, सभी को हाथ मिलाकर आगे बढ़ाना है।

ब्रह्माकुमारी आरती बहिन जोन इन्चार्ज इन्दौर ने अपने ओजस्वी योगयुक्त प्रवचन में बताया कि आज विश्व में अशान्ति का कारण है हमारे मन का अशान्त होना। हमारा मन शान्त होगा तो शुद्ध संकल्प होंगे और उससे वातावरण भी शुद्ध एवं शान्त बनेगा। मन को शान्त बनाने का आधार है योग। योग द्वारा मनरूपी घोड़े पर बुद्धिरूपी लगाम लगायी जा सकती है। आज लोग विभिन्न सम्मेलन, सभाओं में शान्ति की बात तो करते हैं परन्तु उसके कारण पर विचार नहीं करते कि यह अशान्ति क्यों है? आज मन हमारी कर्मेन्द्रियों का राजा बन बैठा है जैसा मन चाहता है, आँखें देखती हैं जैसा मन चाहता है हम सुनते हैं, जो मन चाहता है वही खाते हैं। बुद्धि की आवाज़ मन के समक्ष कमजोर बन गयी है, हमें उसे सबल बनाना है। आत्मा के स्वरूप को पहिचानना है। आत्मा सबल बनेगी अपने पिता परमात्मा से योग शक्ति द्वारा। जब पिता परमात्मा सुख और शान्ति के सागर हैं तो हम उसकी सन्तान आत्माएँ अशान्त क्यों? कारण है हम अपने स्वयं का भूल रहे हैं। हमें याद रखना है अपना स्वरूप कि मैं आत्मा सुख स्वरूप हूँ, शान्ति स्वरूप हूँ, आनन्द स्वरूप हूँ, परमधाम से इस सृष्टि मंच पर अपना पार्ट बजाने आयी हूँ। मेरा पिता परमात्मा शिव है जो सुख, शान्ति प्रेम और आनन्द का सागर है। परमात्मा से सहजता पूर्वक योग लगाना, सम्बन्ध बनाना उसी की याद करना ही सहज राजयोग है। इसे ही बुद्धियोग कहते हैं। क्योंकि इसमें हठयोग की भाँति शारीरिक क्रियाएं नहीं करनी होतीं बल्कि बुद्धि द्वारा परमात्मा से योग लगाना होता है, अपने स्वरूप का चिन्तन करना होता है। हठयोग, शारीरिक-क्रियाओं से होता है और शरीर कर सकता है जबकि राजयोग बुद्धि से होता है और आत्मा को सबल बनाता है। आत्मा सबल होने पर बुराईयों स्वत: दूर रहेंगी। उसे भले-बुरे का ज्ञान है। जैसे चीटी भी नमक और शक्कर का फर्क जानती है। मन पर बुराईयों का भूत सवार है। भक्तिमार्ग में अपने को नीच, पतित, पापी कहकर परमात्मा से उद्धार की बात कहते हैं। अत: वही बात मन में घर बना चुकी है। हमें इन बुराईयों को मन से निकालना है और आत्मिक गुणों, दैवीगुणों को बसाना है। हमें सोचना है कि आत्मा आँखों के द्वारा देखती है, कानों के द्वारा सुनती है, अत: वही इन कर्मेन्द्रियों की स्वामी है और उसी का आदेश हमें मानना है। यदि हम आत्मा के गुणों का ज्ञान कर लेंगे तो मन शान्त हो जायेगा और मन शान्त हो जायेगा तो वातावरण में शान्ति आ जायेगी और वातावरण शान्त बन जायेगा तो विश्व में शान्ति रहेगी।

ब्रह्माकुमारी चन्द्रिका बहिन जो अहमदाबाद के सेवा केन्द्रों की इन्चार्ज हैं ने बताया कि योग शब्द तो बहुत छोटा है परन्तु उसकी अनुभूति बहुत दिव्य है। आपने बताया कि हमारे मन में जैसे संकल्प होंगे, वैसी ही स्मृति बनेगी, जैसी स्मृति बनेगी, वैसी ही स्थिति बनेगी, वैसी ही शक्ति आयेगी और जैसे शक्ति होगी वैसे ही कर्म होंगे, कर्मों से ही संस्कार बनते हैं। याद वह चीज़ है जिससे जो चाहें पा सकते हैं। □

आगरा में हुए विश्व शान्ति सम्मेलन के अवसर पर ब्र० कु० नीलम उत्तर प्रदेश के शिक्षामंत्री भ्राता के० वी० एस० कौशल को सौगात देते हुए।

कुडाप्पा में हुए शिव जयन्ति महोत्सव मे मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० सुन्दरी, भ्राता भट्टाचार्य, आई० ए० एस०, भ्राता नारायनशबु (प्रवचन करते हुए) तथा भ्राता लक्ष्मीनारायण जी।

शिवरात्री के उपलक्ष में उज्जैन में आयोजित "विश्व शान्ति सम्मेलन" में ब्र० कु० मौरिन (लन्डन) भाषण करते हुए। मंच पर बैठी हैं डा० श्रीमती कुमार, ब्र० कु० किरण एवं भ्राता तिवारी, जिला एवं सत्र न्यायाधीश।

भंडारा में शिवरात्री पर विशेष कार्यक्रम में भाषण करते हुए भ्राता हरिमोहन कौल। उनके बाएं भ्राता एम० डी० निलजकर, जिला एवं सत्र न्यायाजीश उपस्थित हैं।

शिव ध्वजारोहण गुमला कोर्ट के वरिष्ट अधिकारी श्री शारदा प्रसाद जी ने किया। साथ में ब्र० कु० भाई बहन हैं।

४९वीं त्रिमूर्ति शिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में मजलिसपार्क (दिल्ली) सेवाकेन्द्र पर बोलते हुए भ्राता आर० के० मित्तल चीफ़ इन्जीनीयर डेसू। साथ में बैठे हैं मुख्य अतिथि भ्राता एम० आर० सिंघल, चेयरमैन वर्कस कमेटी तथा ब्र०कु० राज तथा अमृता जी

आध्यात्मिक सेवा समाचार

"शिव जयन्ती महोत्सव पर ईश्वरीय सेवाओं की धूम

तृतीय विश्व शान्ति महासम्मेलन के तुरन्त बाद १७ फरवरी १९८५ को भारत तथा विदेशों के सर्व ईश्वरीय विद्यालयों द्वारा शिवरात्रि महोत्सव बड़े ही धूमधाम वा हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर कई स्थानों पर विश्व शान्ति सम्मेलन का एक२सत्र अपने शहरों में आयोजित किया गया जिसमें विदेश से आये हुए प्रतिनिधियों ने तथा शहर के प्रमुख व्यक्तियों ने भाग लिया। पूर्व निर्धारित सेवा योजना के अनुसार प्रत्येक सेवा केन्द्र ने अपने शहर के निकटवर्ती ग्रामों में आध्यात्मिक शिव दर्शन प्रदर्शनियों के आयोजन किए—जिससे अनेकानेक भक्त आत्माओं को परमात्मा शिव का सत्य परिचय प्राप्त हुआ। इस अवसर पर अनेक शिव मन्दिरों में भी प्रवचन तथा प्रोजेक्टर शो के कार्यक्रम रखे गए—समाचार जो प्राप्त हो रहे हैं उनका सारांश इस प्रकार है :—

अहमदाबाद-मणिनगर—प्राप्त समाचार के अनुसार शिवरात्रि महोत्सव के दिन लगभग १५ मन्दिरों में एक साथ आध्यात्मिक प्रदर्शनी के आयोजन किए गए—जिससे हजारों भक्त आत्माओं को परमात्मा का सत्य परिचय प्राप्त हुआ। सेवा केन्द्र से सम्बन्धित गीता-पाठशालाओं में भी शिवजयन्ती महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। राजयोग भवन में अहमदाबाद वेदमन्दिर के महन्त स्वामी रवीमुनि जी पधारे तथा अपने हस्तों से शिवबाबा का ध्वज फहराया। सुखशान्ति भवन में गीता मन्दिर के महन्त स्वामी मंगलानन्द जी ने अपने शुभ हस्तों से झण्डा फहराया तथा सभी ने एक साथ—झण्डे के नीचे प्रतिज्ञा ली।

कोलाबा—(बम्बई)—प्राप्त समाचार के अनुसार शिवरात्रि महोत्सव के उपलक्ष में वहाँ के प्रसिद्ध के० सी० कालेज के हाल में सार्वजनिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें वीमेन कौन्सिल महाराष्ट्र की प्रेजीडेन्ट बहन मोहिनी माथुर मुख्य अतिथि के रूप में पधारीं। ब्रह्माकुमारी जयन्ती बहन ने ईश्वरीय सेवाओं पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण था 'अनेकता में एकता' नामक नृत्य नाटिका। इस अवसर पर लगभग ९०० प्रतिष्ठित व्यक्ति पधारे। यह भी समाचार मिला है कि साधू बेला आश्रम के स्वामी गणेशानन्द जी से ब्रह्माकुमारी बहनों की व्यक्तिगत मुलाकात हुई—उन्हें आबू पधारने का निमन्त्रण दिया गया।

बालेश्वर (उड़ीसा)—समाचार मिला है कि बालेश्वर सेवाकेन्द्र की ओर से शिवरात्रि के १० मन्दिरों में प्रदर्शनी के कार्यक्रम एक साथ चले जिसमें हजारों की संख्या में शिव भक्तों को शिव पिता का परिचय मिला। सार्वजनिक कार्यक्रम में ए० डी० एम० तथा ऋषिवेश के स्वामी गोपालनन्द जी व स्वामी प्रचाकर आचार्य जी भी उपस्थित थे। सभी ने शिव परमात्मा का सत्य परिचय प्राप्त किया। शिवरात्रि के महत्व को जानकर भक्त जन बहुत ही प्रसन्न हुए। बालेश्वर के समीप सोरो टाउन में भी आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। जिसमें अनेक आत्माओं ने लाभ लिया तथा १०० आत्माओं ने राजयोग शिविर भी किया।

बैंगलौर—विश्वेश्वपुरम् सेवाकेन्द्र की ओर से प्राप्त समाचार के अनुसार शिवजयन्ती महोत्सव के उपलक्ष में स्थान-२ पर प्रोजेक्टर शो के कार्यक्रम रखे गए। रिमाड होम में १०० बच्चों तथा स्टाफ ने लाभ लिया। शिवजयन्ती के शुभ दिवस पर राममन्दिर और सम्पंगी रामनगर में प्रदर्शनी के कार्यक्रम रखे गए। चार दिवसीय प्रदर्शनी द्वारा हजारों भक्त आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश मिला तथा १०० आत्माओं ने राजयोग शिविर किया। दो दिन सार्वजनिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। जिसमें शहर की अनेक नामी-ग्रामी आत्मायें पधारीं।

जयपुर—समाचार मिला है कि शिवजयन्ती के उपलक्ष में केन्द्र पर ही अमरनाथ की झाँकी एवं शिवप्रदर्शनी का आयोजन किया गया। श्वेत झाँकी बर्फ एवं रूई से बनाई थी। इसका उद्घाटन राजस्थान के भूतपूर्व मुख्य सचिव आर० डी० माथुर ने किया। प्रदर्शनी का अवलोकन करने के बाद उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यहाँ के शान्त एवं पवित्र वातावरण में आकर मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। यहाँ से मैं आत्मिक उन्नति की प्रेरणा लेकर जा रहा हूँ। उन्हें विद्यालय की गतिविधियों तथा तृतीय विश्व शान्ति सम्मेलन से भी अवगत कराया गया। प्रदर्शनी तथा झाँकी देखने अनेक आत्मायें प्रतिदिन आती रहतीं हैं।

भटिन्डा—सेवाकेन्द्र से प्राप्त समाचार के अनुसार मानसा तथा भटिण्डा में शिवजयन्ती सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर दो दिन लगातार प्रभात फेरी निकाली गई। सात दिन के प्रवचन तथा प्रदर्शनी के कार्यक्रम भी रखे गए। मानसा सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित सार्वजनिक कार्यक्रम में वहाँ के एस०डी०एम० पधारे तथा अपने हस्तों से शिवबाबा का झण्डा लहराया।

(शेष पृष्ठ २० पर)

'राजयोगा महोत्सव' में भाग लेने के लिए पधारे हुए महानुभावों में से ब्र० कु० बसवराज, धारवाड़ (कर्नाटक) विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० एस० डी० देसाई, संयुक्त कर्नाटक समाचार-पत्र के सम्पादक भ्राता ए० आर० उपाध्याय, ब्र० कु० सुनन्दा तथा ब्र० कु० निर्मला दिखाई दे रहे हैं।

भुवनेश्वर में युवावर्ष के उपलक्ष में आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में विजेता छात्रों के साथ ब्र० कु० सन्देशी दिखाई दे रही हैं।

गोहाटी सेवाकेन्द्र द्वारा 'स्मृति दिवस' पर आयोजित कार्यक्रम में गोहाटी उच्च न्यायालय के न्यायधीश के० एन० सेकिया जी अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं तथा मंच पर ब्र० कु० जोनाली, ब्र० कु० धीरेन, ब्र० कु० शीला तथा ब्र० कु० सौरव आदि बैठे हैं।

ऊटी में आयोजित 'सर्वधर्म सद्भावना सम्मेलन' में भाग लेने के लिये पधारे हुए महानुभाव व संत महात्मा दिखाई दे रहे हैं।

कटक, तेलंगा बाजार सेवा केन्द्र पर शिव जयन्ति के अवसर पर शिवध्वज आरोहण दृश्य।

पुरी में 'जगन्नाथ मन्दिर' में आयोजित कार्यक्रम में ब्र० कु० निरूपमा प्रवचन कर रही हैं तथा मंच पर सम्मेलन के अध्यक्ष भ्राता शरतचन्द्र रोटरी, तथा अन्य धार्मिक नेता बैठे हैं।

लखनऊ में आध्यत्मिक समारोह में मंच पर बैठे हैं ओम प्रकाश रस्तोगी, निर्देशक स्कूटर इन्डिया तथा फादर लियोडी सूजा कैथोलिक चर्च व दादी भगवती जी।

कटक—कालेज स्केअयर सेवाकेन्द्र द्वारा ४९वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ति के अवसर पर आयोजित सार्वजनिक समारोह में मुख्य अतिथि श्याम सुन्दर पाड़ी (निर्देशक जनरल पुलिस एवं प्रशासन) प्रवचन करते हुए।

लातूर शिवरात्री के महोत्सव का उद्घाटन करते हुए भ्राता डी० बी० पवार, प्रशासक नगर परिषद्।

(पृष्ठ १८ का शेष)

'युवा जागृति पद यात्रा''

अहमदाबाद :—समाचार मिला है कि अहमदाबाद साबरमती के गांधी आश्रम से गांधीनगर तक १५० युवा ब्रह्माकुमार, कुमारियों की पदयात्रा निकाली गई जिसका शुभारम्भ गांधी आश्रम के प्रागण में गुजरात विद्यापीठ के मुख्य भ्राता रामलाल परीख ने किया। उन्होंने कहा कि युवा जगत में जागृति लाने के शुभ उद्देश्य को लेकर निकलने वाले ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के इन युवा भाई बहनों को मैं बहुत-२ शुभ बधाई देता हूँ। जिस स्थान से बापू गांधी जी ने भारत देश की आजादी का नारा बुलन्द किया था उसी पावन स्थान से युवा वर्ष के उपलक्ष में यह युवा भाई बहनें एक आध्यात्मिक जागृति लाने हेतु इस पदयात्रा में निकलने जा रहे हैं यह बहुत ही आनन्द और खुशी की बात है। इस पद यात्रा का लगभग २० संस्थाओं के प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा स्वागत हुआ। इस पदयात्रा में सबसे आगे "युवाजागृति पदयात्रा" नाम का बहुत सुन्दर बैनर तथा परमात्मा शिव का ध्वज था। साथ में एक युवक के हाथ में "युवा जागृति मशाल थी जिसको गुजरात जोन की संचालिका सरला बहन ने प्रज्वलित किया। लगभग २५ किलोमीटर की इस एक दिवसीय यात्रा के दौरान पदयात्रा मार्ग में युवा संस्थाओं के प्रतिनिधियों, गांव के सरपंचों तथा स्कूल के प्रिंसीपाल्स आदि ने सभी ने स्वागत किया। पदयात्रा मार्ग पर दोपहर भोजन के समय कस्तूरबा स्त्री अध्यापन मन्दिर में खास एक सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया—जिसमें उपस्थित मुख्य मेहमानों ने इन पदयात्रियों की बहुत-बहुत सराहना की और कहा आज के वातावरण में जो युवा एक दो किलोमीटर चलना भी असम्भव समझते, जो व्यसनों से मुक्त नहीं हो सकते ऐसे समय में इस विद्यालय के युवा भाई बहनें जो सम्पूर्ण धारणायुक्त जीवन जो रहे हैं और युवा जागृति के लिए २५ किलोमीटर की यात्रा की है यह बहुत ही हर्ष की बात है। पदयात्रा में और भी दो तीन स्थानों पर छोटे-२ कार्यक्रम हुए। इसके फलस्वरूप अनेक गांवों तथा हाईस्कूलों आदि से ईश्वरीय सेवा करने के निमन्त्रण प्राप्त हुए है। पदयात्रा के समाप्ति समारोह में विशेष बनी हुई स्टेज पर गांधीनगर की विभिन्न १० सामाजिक सांस्कृतिक और युवा संस्थाओं ने युवा जागृति मशाल का स्वागत और पदयात्रियों का सम्मान किया।

प्रश्नों के उत्तर

ज्ञानामृत के पिछले अंक में दिये प्रश्नों के उत्तर—

१. छोड़ो तो छूटो २. भाई-भाई का ३. साथ चलेंगे ४. सर्वगुण सम्पन्न, १६ कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी मर्यादा पुरुषोत्तम, सम्पूर्ण अहिंसक।

स्वपरिवर्तन द्वारा ही विश्व का सामाजिक आर्थिक ढांचा बदला जा सकता है

माउण्ट आबू १२ फरवरी—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित तृतीय विश्व शान्ति सम्मेलन में विश्व शान्ति भवन के सभागार में "स्वपरिवर्तन द्वारा ही विश्व का सामाजिक, आर्थिक ढांचा बदला जा सकता है" विषय पर अपने अनुभवयुक्त विचार व्यक्त करते हुये डिवाईन लाईफ सोसायटी के अध्यक्ष स्वामी चिदानन्दजी महाराज ने कहा कि, बाह्य प्रपंच एवं उसकी समस्याओं में ध्यान देने की बजाय यदि आन्तरिक समस्या—स्वयं का सुधार कर लिया जाये तो विचार एवं विवेक के जागृत होने से बाह्य समस्याओं का समाधान हो जायेगा। उन्होंने कहा कि ये इन्द्रियां हमारी नौकर हैं, ये हमारे ऊपर शासन न करें यह आध्यात्मिक शिक्षण योग द्वारा ही होता है जो राजयोग प्रजापिता, ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय सिखा रहा है, वही भगवत गीता का राजयोग है। इस राजयोग से सींचा गया दवी सम्पदा का बीज एक दिन अवश्य अंकुरित होगा और उस पर दिव्य गुणों के फल अवश्य लगेंगे। आज तो तमोप्रधानता, भ्रष्टाचार शोषण फैल रहा है, उससे बचने के लिये विकारों से निवृत्त होने के लिये दृढ़ इच्छाशक्ति चाहिये, वह मिलती है राजयोग के अभ्यास से, जिससे सद् इच्छायें जागृत होती हैं, बुरी वासनायें समाप्त हो जाती हैं। फिर जब मनुष्य सतोगुणी बन जाता है तो सारी सामाजिक, आर्थिक समस्याओं का समाधान स्वतः ही निकल आता है।

यूनिवर्सल सनातनधर्म फाउन्डेशन के अध्यक्ष आचार्य प्रभाकर मिश्राजी ने इस विषय पर विचार व्यक्त करते हुये बताया कि निश्चय ही व्यक्ति परिवर्तन से ही समाज परिवर्तन होगा। आज व्यक्ति का मानस विकारी है इसीलिये वह लोभ के वशीभूत भ्रष्टाचार करता है। उन्होंने कहा कि संसार में जितने भी वाद (समाजवाद, साम्यवाद, पूंजीवाद) आदि हैं वे सब तो जीविका चलाने वाले वाद हैं। लेकिन आध्यात्मवाद जीवन चलाने का वाद है जिसे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय अपनी आध्यात्मिक क्रान्ति द्वारा ला रहा है।

संयुक्त राष्ट्रसंघ में ईश्वरीय विश्वविद्यालय की सामाजिक आर्थिक मामलों की स्थायी प्रतिनिधि ब्रह्माकुमारी मोहिनीजी ने बताया कि आज संयुक्त राष्ट्रसंघ ने यह माना है कि व्यक्ति-परिवर्तन आध्यात्मिकता द्वारा ही होगा और व्यक्ति परिवर्तन से ही सामाजिक, आर्थिक समस्याओं का समाधान मिल सकता है।

डॉ० अरनैस्टो, मैक्सीको के प्रबन्ध परामर्शदाता ने बताया कि भौतिक वाद के बढ़ने से हर वस्तु का व्यापारीकरण हो गया है, इसी से आर्थिक समस्याओं में बढ़ोत्तरी हुयी है। अतः मनुष्य के मन में आध्यात्म चेतना करके समस्त सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

महाराष्ट्र के लोक आयुक्त श्री देशपाण्डे जी ने भी यही विचार व्यक्त किया कि मानव के मन में सहानुभूति दया, क्षमा, करुणा पैदा करके इस समस्या का समाधान किया जा सकता है।

राजयोग शिक्षका ब्र० कु० शीलू बहिन ने कहा कि आध्यात्मिकता द्वारा ही समस्त समस्याओं का समाधान सम्भव है। इससे मनुष्य का नैतिक उत्थान होता है बुरी आदतें छूटती हैं और उसकी गरीबी मिट जाती है।

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सहमुख्य प्रशासिका दादी जानकी जी का भी यही विचार था कि स्वपरिवर्तन से सामाजिक, आर्थिक समस्याओं का समाधान होगा। □

विश्व शान्ति सम्मेलन में युवक एवं शिक्षा विद् कार्यशालाओं मे गम्भीर विचार-मन्थन

माउन्ट आबू १२ फरवरी ८५—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्य विद्यालय द्वारा आयोजित तृतीय विश्व शान्ति महासम्मेलन के चतुर्थ दिन विश्व परिवर्तन पर युवक एवं शिक्षाविदों की कार्यशालाओ में गम्भीर विचार-मन्थन किया गया।

राजयोग सेन्टर इन्दौर की इन्चार्ज ब्रह्माकुमारी बहिन किरण ने युवा कार्यशाला में युवकों द्वारा विश्व परिवर्तन विषय पर बोलते हुए कहा कि युवा परिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन होगा। क्योंकि, युवकों की संख्या बहुत अधिक है, युवावर्ष में युवकों को बहुत कुछ करना है। बहुत से युवक ग्रामों में रहते हैं उनकी तरफ ध्यान देना है ताकि वे युवावर्ष की उपलब्धियों से वंचित न रह जावें। युवक देश के कर्णधार हैं उन्हें देश को आगे बढ़ाना है और यह उत्तरदायित्व केवल वह ही सम्भाल सकते हैं जो नैतिकता से परिपूर्ण हों। आज युवकों को चाहिये कि वे देश में रचनात्मक आन्दोलन छेड़ दें। अपने देशवासियों को नशीली आदतों, व्यसनों से मुक्त करा दें। तोड़फोड़ करनी है तो भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी के खिलाफ करें। इसके लिये उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन लाना होगा। कोरे आदर्श वाले का प्रभाव नहीं पड़ता। जैसा हम करेंगे वैसा ही अनुकरण अन्य लोग करेंगे। युवा अवस्था सेवा करन में सक्षम है इसलिये युवकों को हर क्षेत्र में आगे बढ़ना है। आध्यात्म हमें सत्य से परिचय कराता है अतः युवकों को आध्यात्म में भी रुचि रखनी चाहिये।

पंजाब विश्व विद्यालय युवा कल्याण के निदेशक भ्राता आई० एस० ढिल्लन ने कहा कि युवा-शक्ति राष्ट्र की महान शक्ति होती है, इस शक्ति का उपयोग देश के नवनिर्माण हेतु करना चाहिये। आपने कहा कि युवकों को सांस्कृतिक कार्यों योगशिविर, प्रदर्शनी, सेमीनार, मेले, समुदाय सभायें, स्वच्छता आदि के आयोजन में लगाना चाहिये। उनको धार्मिक शिक्षाओं से लाभ लेना चाहिये। राजयोग सीखना चाहिये। सार्थक संगठनों से सम्बद्ध रहकर ही वे उन्नति और विकास की सीढ़ी पर चढ़ सकते हैं। उन्हें समाज का नेतृत्व करना है, देश का भावी भार उन्हीं के कन्धों पर है। भ्राता ढिल्लन ने कहा कि आज की शिक्षा युवकों पर सही मार्ग-दर्शन नहीं करती। वह उसमें निराशा के भाव पैदा करती है। गन्दा साहित्य उसमें आग पर घी का काम कर रहा है, अतः युवा पीढ़ी को उनसे बचाना है और ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय जैसी शिक्षाएँ प्रदान करनी हैं।

ब्रह्माकुमारी बहिन सुधा ने कहा कि युवक को निराशा तब आती है जब उसे अपनी प्रतिमा को प्रदर्शित करने का मौका नहीं मिलता। वह सही दिशा से भटक जाता है। अतः उसे दिशा देनी है, मार्ग-दर्शन करना है, ईश्वरीय विश्वविद्यालय उसे दैविक गुणों का रास्ता दिखाता है। युवा परिवर्तन से समाज में चेतना आवेगी क्योंकि भावी समाज के निर्माता आज के युवक ही हैं। और युवकों में परिवर्तन से विश्व बदलेगा। ब्रह्माकुमार अशोक गावा ने कहा कि, युवकों को आज नई चुनौतियों का सामना करना है। हिंसा को अहिंसा और प्रेम से दबाना है। शान्ति के हथियार आणविक शक्ति से कहीं अधिक शक्तिशाली और प्रभावशील हैं। ब्रह्माकुमारी विली बहिन ने कहा कि युवकों का परिवर्तन ही परिवार और समाज को बदल कर देश तथा विश्व में परिवर्तन ला सकता है। हमें युवकों को शान्ति की शिक्षा देनी है। राजयोग सिखाना है। भ्राता माईकेल, सिडनी ने भी राजयोग द्वारा युवकों के मन परिवर्तन पर जोर दिया। योग केन्द्र हैदराबाद

के निर्देशक भ्राता नवीन कपाडिया ने हठयोग और पातांजली योग का अनुभव सुनाते हुए बताया कि राजयोग का संबंध बुद्धि से है। बुद्धि से मन को स्वस्थ्य बनाया जा सकता है और स्वस्थ्य मन ही स्वस्थ्य विश्व का निर्माण कर सकता है अत: युवकों को आज राजयोग एवं आध्यात्मिक शिक्षा की अति आवश्यकता है।

शिक्षाविद कर्मशाला में आगरा जोन इन्चार्ज राजयोगिनी विमला बहिन ने बोलते हुए कहा कि आज समाज में शिक्षित व्यक्ति को सभ्य कहा जाता है और उसे सम्मान दिया जाता है किन्तु व्यावहारिक तौर पर देखा जाता है कि सर्वाधिक अशांत यह सभ्य और शिक्षित समाज ही है। आज स्कलों में विद्यार्थियों की अनुशासनहीनता चरम सीमा पर है। वास्तव में इसके लिये वे दोषी नहीं हैं। उन्हें जो शिक्षा दी जा रही है, जो मार्ग-दर्शन किया जा रहा है उसकी कमी है। आज छोटी-सी बात पर मानव-मानव का जीवन नष्ट कर देता है। आखिर क्यों ? उसमें सहनशीलता, प्रेम और सद्भावना जैसे दवीगुणों का अभाव है। शिक्षा वह है जो जीवन में परिवर्तन करे। आज स्कूल, कालेज और विश्वविद्यालयों में जो डिग्री दी जाती है वह मात्र नौकरी दिलाती है। बाह्य शिक्षा से आन्तरिक परिवर्तन नहीं हो सकता। आन्तरिक परिवर्तन के लिये आध्यात्मिक शिक्षा जरूरी है। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय आज यही शिक्षा दे रहा है। यहाँ मानव का जीवन परिवर्तन किया जाता है, दैवी गुणों को धारण कराया जाता है, उसे देवत्व की ओर ले जाया जाता है। आज हमारी शिक्षा शारीरिक रोगों के इलाज तो बताती है परन्तु आत्मिक कमजोरी का इलाज नहीं। इसका इलाज केवल नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा ही है। अत: युवकों को इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की भांति हर स्कूल और कालेजों में नैतिक शिक्षा दी जानी चाहिये। तभी समाज बदलेगा और विश्व में परिवर्तन आयेगा।

प्रो० सुखाडिया ने कहा कि विश्व परिवर्तन हेतु हम लोगों को लक्ष्य परिवर्तन करना है और यह तभी सम्भव है जब शिक्षा में परिवर्तन होगा, वह हमें सद्-उद्देश्य का मार्ग दिखाये। महाराष्ट्र के लोकायुक्त भ्राता देशपाण्डे ने भी चरित्र विकास हेतु शिक्षा में आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा पर जोर दिया।

मानव भावनाशील बने (पृष्ठ १२ का शेष)

चण्डीगढ़ से प्रकाशित दैनिक ट्रिब्युन के सम्पादक भ्राता राधेश्याम शर्मा ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि सद्भावना की तो बात ही अलग है आज तो मानव में भावना ही नहीं रही है, भावना-शून्य हो गया है। अत: ऐसा माहौल बनाया जाये जिससे मानव भावनाशील बने। समाज को जोड़ना कठिन है लेकिन तोड़ना आसान है। समाज को जोड़ने का कार्य अखबार, रेडियो, सिनेमा कर सकते हैं, विश्व शान्ति, मानव प्रेम का माहौल बना सकते हैं, इससे सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों को भी बल मिलेगा।

ब्राजील की पत्रकार डैनिस ने पत्रकारों को सापेक्ष चिन्तन की प्रेरणा देते हुए विश्व शान्ति के लिये कार्य करने की प्रेरणा दी।

बम्बई से प्रकाशित सिन्धी समाचार पत्र हिन्दुस्तान के मुख्य सम्पादक आर० एच० अडवानी ने कहा कि आज नकारात्मक समाचार ज्यादा छापे जाते हैं, परिवर्तन की खबर नहीं छापते अत: जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि हो जाती है।

स्वीडन की पत्रकार आश्राफे ने पत्रकारों की स्वतंत्रता पर प्रकाश डाला कि स्वतंत्र पत्रकार सही एवं सापेक्ष खबरें छाप सकते हैं।

कार्यशाला की अध्यक्षता ब्र० कु० मोहिनीजी ने की तथा संचालन ब्र० कु० सुन्दरलालजी ने किया। □

युवकों की समस्या का समाधान

ले०—ब्रह्माकुमारी सुधा, शक्तिनगर, दिल्ली

आज प्रौढ़ अथवा वृद्ध पीढ़ी के लोग प्राय: कहा करते हैं कि वर्तमान समय की युवा पीढ़ी तोड़-फोड़ के कार्यों में लगी रहती है और कि युवकों तथा युवतियों को इस हिंसात्मक प्रवृत्ति को अवश्य ही छोड़ देना चाहिए। निस्सन्देह उनकी यह बात तो ठीक है क्योंकि हिंसा करने वालों के अपने ही संस्कार बिगड़ते हैं और उनके कार्यों से अपने ही देश की सम्पत्ति नष्ट होती है, परन्तु युवा वर्ग को कोई यह नहीं बताता कि उनके मन में जो असन्तोष की लहर उठती है उसका वे निराकरण कैसे करें। तोड़-फोड़ तो युवा भी नहीं करना चाहते परन्तु उनके मन में प्रश्न उठता है कि जब उनकी आकांक्षाएं कुचली जाती हैं, उन्हें उनकी योग्यताओं को व्यक्त करने का समुचित अवसर नहीं मिलता तब उनके मन में जो एक ज्वारभाटा-सा आता है अथवा एक आक्रोश पैदा होता है, उसको वे कैसे शान्त करें और अपनी आशाओं को रौंदे जाते देखकर जो उन्हें मानसिक क्लेश होता है, उस समय के अपने जोश-ए-जवानी को किस रचनात्मक कार्य में और कैसे लगायें।

नसीहत बुजुर्गों की भी ठीक है और जो मजबूरी युवक बताते हैं, उसमें दोष उनका भी महसूस नहीं होता। वास्तव में गलती कहीं और है। वह यह है कि युवक अपनी आकांक्षाओं को किस प्रकार अभिव्यञ्जित करें—इसका कोई हल उन्हें मिल जाए। तब वही युवक देश और समाज को अपनी हिम्मत और अपने हौंसले से सुखी व समृद्धिशील बना देंगे।

आइये पहले यह देख लें कि युवकों के मन में आक्रोश पैदा क्यों होता है कि जिससे तोड़-फोड़ की नौबत बन आती है। दो-एक उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो जाएगी। एक समस्या जो बनी ही हुई है, वह यह है कि कई वर्ष स्कूल, कालेज में शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी उन्हें नौकरी नहीं मिलती। किसी एक पद के लिए वे प्रार्थना-पत्र डालते हैं और उन्हें आशा होती है कि वे उस कार्य को बड़ी अच्छी तरह से कर सकते हैं परन्तु उन्हें उस कार्य के लिए चुना ही नहीं जाता, मौका ही नहीं दिया जाता, उस पद के लिए उनकी नियुक्ति ही नहीं होती। जब जगह-जगह और बार-बार महीनों या वर्षों तक स्थान-स्थान पर जूते घिसने के बाद भी निराशा ही उनके पल्ले पड़ती है और हर स्थान पर उनका प्रार्थना-पत्र रद्दी की टोकरी में डाल दिया जाता है। तो उनके मन पर जो गुज़रती है, उसे वे ही जानते हैं। बार-बार वे प्रार्थना-पत्र टाइप करते रहते हैं, अपने प्रमाण-पत्रों को समर्थित कराते हैं और घर में कहकर जाते हैं कि आज फिर इन्टरव्यू के लिए जा रहे हैं और उनके मात-पिता तथा अभिभावक उन्हें शुभाशीष देते रह जाते हैं और वहाँ सारा दिन क्यू (queue) में लगे रहने के बाद फिर जब वे निराश होकर वापस लौटते हैं और उनके घर वाले अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को बताते हैं कि हमारे बेटे की नौकरी नहीं लगी तो सोचिए यह सुनकर उनकी क्या हालत होती होगी, उनके लिए यह कितनी शर्मसारी का मौका होता है। जाएँ तो जाएं कहाँ! वे देखते ही रह जाते हैं कि माँ बाप ने उनकी शिक्षा पर कितना खर्च किया, पालन-पोषण किया, उन्हें बड़ा किया और आज इस जागती जवानी में सही सलामत होने पर भी अपने माँ-बाप की सेवा करना तो एक ओर रहा, वे उनकी कमाई पर बोझ बने हुए हैं। पढ़े-लिखे होने पर वे काम माँगते हैं (कोई भीख नहीं माँगते) और उन्हें काम भी नहीं दिया जाता। तब उन्हें खाना भी हराम लगता है और ऐसे समाज के प्रति उनके मन में विद्रोह की

भावना जाग उठती है। वास्तव में देखा जाए तो वे सच्चे हैं परन्तु विद्रोह करने की आवश्यकता नहीं। नौकरी न मिलने के मुख्य तीन ही कारण हो सकते हैं। उन पर विचार करने से निष्कर्ष सामने आ जाएगा कि युवा वर्ग को क्या करना चाहिए।

कारण और निवारण

नौकरी न मिलने का एक कारण यह हो सकता है कि पद कम हों और प्रार्थना पत्र ज्यादा। स्वाभाविक है कि यदि रिक्त स्थान कम होंगे और प्रार्थी अधिक, तब सबको तो वह स्थान मिल नहीं पायेगा। अतः इस कारण का निवारण तोड़-फोड़ नहीं बल्कि जनसंख्या में वृद्धि की तीव्र गति की रोकथाम है। जिस गति से आबादी बढ़ रही है, यदि उसी गति से यह बढ़ती रही तब तो बेरोजगारी और भी बढ़ती जाएगी। अतः ज़रूरत इस बात की है कि देशवासी संयम नियम का जीवन व्यतीत करें और अधिक आबादी को समाज के लिए एक बोझ मानें अथवा उसे एक अभिशाप समझें। यदि आबादी बढ़ती जाएगी तो सरकार चाहते हुए भी युवकों को जीविकोपार्जन के साधन नहीं दे सकेगी।

दूसरा कारण यह हो सकता है कि वह स्थान किसी पहुँच, सिफारिश या रिश्वत के फलस्वरूप किसी अनाधिकारी को दे दिया गया हो जबकि योग्य व्यक्ति उससे वंचित रह गया हो। अतः व्यवसाय न मिलने का कारण भ्रष्टाचार और समाज में अनैतिकता का प्रसार है। उसको दूर करने का तरीका तोड़-फोड़ नहीं बल्कि प्रेम और सद्भावना से नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा देकर एक स्वच्छ समाज का निर्माण करना ही इस कारण का निवारण है। तोड़-फोड़ के द्वारा तो बुरे समाज में एक बुराई की वृद्धि हो होगी जो कि आग में घी डालने के बराबर है। इससे तो असामाजिक तत्वों को बढ़ावा मिलेगा क्योंकि दो बुराइयाँ मिलकर एक भलाई नहीं बनती (Two wrongs do not make a right)

तीसरा कारण यह हो सकता है कि परीक्षा प्रणाली में कुछ दोष होने के कारण परीक्षार्थी की योग्यता को ठीक रीति से आंका नहीं गया और उसके कारण उसे जो प्रमाण पत्र मिले वे उसकी योग्यता को साधारण अथवा मध्यम घोषित करते हैं और आज जब वो किसी पद की चुनौती को स्वीकार करने को तैयार हैं तो वे प्रमाण-पत्र उसे अयोग्य घोषित करते हैं। और इससे उसको ऐसा लगता है कि शिक्षा, परीक्षा और पद के लिए चयन-प्रणाली—ये सब दोष-युक्त हैं जिन्होंने उसके जीवन को बेकार बना दिया है और उसके धन व शक्ति को व्यर्थ कर दिया है। परन्तु इन सबको भी ठीक करने का उपाय तोड़-फोड़ नहीं बल्कि समुचित तरीके से इसमें संशोधन करना है।

ऊपर जो हमने एक उदाहरण दिया है, वह युवकों के सामने जो अन्य समस्याएँ हैं, उनको भी प्रतिबिम्बित करता है। इस एक उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिंसा, तोड़-फोड़ और उथल-पुथल से यह समस्या सुलझने वाली नहीं। इसका हल शिक्षा-सुधार, समाज-सुधार और आत्म-सुधार में है। समाज में परिवर्तन (transformation) लाने की आवश्यकता है।

अतः युवकों के लिए एक बहुत बड़ा कार्य-क्षेत्र उनके सामने है कि वे आध्यात्मिक विद्या द्वारा एवं चारित्रिक उत्थान द्वारा महान व्यक्ति बनें। समाज को महान बनाने की चुनौती स्वीकार करें और स्वपरिवर्तन द्वारा समाज परिवर्तन और विश्व परिवर्तन में अपनी युवा शक्ति को लगा दें ताकि अभी जिन निराशाओं का उन्हें सामना करना पड़ता है, आने वाली पीढ़ी को उनका सामना न करना पड़।

युग का जुआ, युवा के कंधों पर

ब्र० कु० रानी, मुजफरपुर

आज सम्पूर्ण विश्व एक घुटन-सा महसूस कर रहा है। धर्म का चक्कर जैसे कि बहुत दिनों से जाम हुआ पड़ा है। इसको चालू किए बिना कोई भी दिशा पकड़ना असंभव है। हम सभी विश्व को नयी दिशा देना चाहते हैं; मानव इतिहास को नये मोड़ पर लाकर नया विश्व निर्माण करना चाहते हैं। यह कार्य उनसे नहीं हो सकता जो शिथिल पड़ चुके हैं, जीवन की अंतिम यात्रा पर हैं। यह युवा शक्ति द्वारा ही संभव है।

कल के विश्व की तस्वीर आज की युवा पीढ़ी है। ऊँची चेतना, असीमित उत्साह, अपार धैर्य तथा साहस से भरे नवयुवक और नव-युवतियाँ अज्ञानता के अन्धकार में भटक रहे जीवों को ज्ञान के सोझरे में लाकर उनको नवजीवन दे सकते हैं।

प्रायः सभी युवा अपने भीतर एक ही परिकल्पना दबाये बैठे हैं—नये राष्ट्र का निर्माण। इस नये प्रकार के समाज का निर्माण करने के लिए ये विभिन्न प्रकार की पद्धतियों को अपनाते हैं। कभी तो ये पद्धति शांति के रूप में हमारे सामने प्रखर होती है लेकिन कभी-कभी हड़ताल, तोड़-फोड़, या आगजनी के बवंडर के रूप में भी दिखाई देती है; लेकिन उन सबका उद्देश्य एक ही होता, माँग एक ही होती—नया समाज ! नयी सुविधा ! नया जीवन !

युग रूपी गाड़ी का जुआ युवा के कंधों पर है। अब यह बात उनपर ही निर्भर करती है कि वे गाड़ी का रुख किस दिशा में करना चाहते हैं—आने वाले कल की तरफ या गुजरे अतीत की तरफ। यह वही जुआ है जिसे खींचने का प्रयत्न कइयों ने किया; किन्तु मंजिल तक पहुँचने के पूर्व ही या तो जुआ पटक दिया गया या उनकी दिशा ही बदल गई। कई प्रकार के सुधार आन्दोलन भी चलाये गये; लेकिन उसकी भी धारा कुछ तक जाकर रुक गई। विनाश के कागार पर खड़े विश्व का एक-एक मानव भावी आशंकाओं से भयभीत है और भयभीत व्यक्ति किंकर्तव्यविमूढ़ होता है।

युवा की सबसे बड़ी विशेषता होती है साहस। जिसमें साहस है वही निडर है, निर्भीक है। परिस्थितियों को चुनौती देना, कठिनाइयों से अठखेलियाँ खेलना तो युवाओं की आम आदत है। वह क्यों पीठ दीखाते मुसीबतों को।

समाज को नया रूप देने के लिए दो शक्तियों की आवश्यकता है—शारीरिक शक्ति और मानसिक शक्ति। वास्तव में ये दोनों ही शक्तियाँ युवाओं में उपलब्ध है। शारीरिक शक्ति का उपयोग कड़ी मेहनत, अथक सेवा तथा मानसिक शक्ति का उपयोग स्वस्थ्य संकल्प, स्वस्थ्य विचार और अनुशासित रहने में किया जा सकता है।

युवाओं का मुख्य नारा है "क्रांति नहीं, तो शांति नहीं।" उनका यह नारा एक सौ क्या, एक सौ एक प्रतिशत सत्य है। हम परिवर्तन चाहते हैं और परिवर्तन क्रांति के बिना संभव नहीं। क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए क्रांतिकारी कदम उठाना हो होगा; लेकिन क्रांति किस प्रकार की होनी चाहिए, पहले सोच लेना उपयुक्त होगा।

आध्यात्मिक क्रांति ही एकमेव हल

कभी-कभी हम बिना सोचे-समझे पहल करने लग पड़ते हैं; फलस्वरूप सही उद्देश्य होते हुए भी हमारे कदम गलत दिशा की ओर बढ़ने लगता है, और हम दलदल में फँस जाते हैं। लाभ के बदले हानि होने लगती है। आज हम तोड़-फोड़, गोलाबारी, मार-पीट, आगजनी और लट-पाट को ही

क्रांति कहने लगे हैं। हम ऐसा वास्तव में अपने समस्याओं के निदान के लिए करते हैं, लेकिन होता उल्टा है। भावावेश में आकर हम यह तो सोचना भूल ही जाते हैं कि हम जिस सम्पत्ति को क्षति करने जा रहे हैं वह हमारी ही सम्पत्ति है। क्षति-ग्रस्त भी स्वयं हो करते हैं तो उसकी क्षतिपूर्त्ति भी स्वयं ही करनी पड़ती है। परिणाम ? लेने के देने पड़ जाते हैं। फिर वही रोना, वही धोना, वही चिल्लाना और वही भाग-दौड़ लगा ही रहता है।

युवा वर्ग क्रांति अवश्य करे लेकिन वह आध्यात्मिक क्रांति हो। यही क्रांति एकमेव हल है सर्व समस्याओं का, एकमेव उपाय है समग्र शांति का, एकमेव आधार है नये राष्ट्र के गठन का और एकमेव स्तम्भ है नवयुग निर्माण का।

हम क्रांति करते हैं भ्रष्टाचारों और अत्याचारों के खिलाफ। इसका मतलब हम चरित्रहीनता का अंत करना चाहते हैं और श्रेष्ठता को पैदा करना चाहते हैं। और है भी सत्य। भ्रष्टाचारिता मिटी मतलब समस्यायें मिटीं। यह कार्य केवल आध्यात्मिक पहलू से ही संभव है। जब तक हम जड़ समेत उसे निर्मूल नहीं कर देते भ्रष्टाचार मिट नहीं सकता। हम करते उल्टा हैं। डाल काट देते और जड़ में पानी डालते जाते, परिणाम ? क्या पेड़ पुनः हरा-भरा हो जाता ?

क्रांति का प्रारंभ स्वयं से

भ्रष्टाचार और चरित्रहीनता की जड़ें हैं देह अभिमान। जब तक भाई-भाई की दृष्टि नहीं होती, बंवडरों का सैलाब उमड़ता ही रहेगा। आध्यात्मिक क्रांति हमें स्वयं से क्रांति की शुरुआत करने को प्रेरित करता है। जब हम अपने आपको आत्मा समझते हुए अन्यों को भी आत्मा समझने लगते हैं तो हमारी दृष्टि बदल जाती है, वृत्तियों में भाई-भाई का ही प्रकंपण भर जाता है। जैसे ही हमारे अन्तःकरण में यह कुसुम खिल उठता है कि हम सभी आत्माएँ एक परमपिता की संतान आपस में भाई-भाई हैं तो हम देहभान से ऊपर उठने लगते हैं और जैसे-जैसे हम देहभान से ऊपर उठते जाते हैं हमारी एक-एक साँस भद्रता का संगीत बन जाता है, हमारे हर कदम मानव कल्याण की दिशा में उठकर एक तीव्र रूहानी खशबू बिखेर देता है। अतः क्रांति का प्रारंभ स्वयं से ही करना होगा।

एक बिडम्बना

ये संविधान, ये कचहरी, ये कानून, ये पुलिस, ये जेल किसलिए बनाये गये हैं ? अपराधियों के लिए। और अपराधी हैं कौन ? बलात्कारी, हत्यारा, चोर, घूसखोर और उत्पाती। इन अपराधियों से हम घृणा करते हैं, न्याय उन्हें जेल की सलाखों में बंद कर देता है। क्या जेल के सींखचों में बंद कर देने से अपराधों में कमी आती है या अपराधियों की मनोवृत्ति में कोई परिवर्तन आता है ? शायद नहीं। वह पहले से भी चुस्त और दुरुस्त अधिक हो जाता है। तो कहाँ है उसकी जड़ें। जड़ को निर्मूल हुए बिना, अपराध कम नहीं हो सकता। अपराधियों की मनोवृतियों में अपराध होता है।

कैसी विडम्बना है ! संविधान ने बलात्कारियों, चोरों, हिंसक तत्त्वों आदि के लिए कानून तो बनाये लेकिन अपराध हो ही नहीं इसके लिए कभी विचार ही नहीं किया।

आध्यात्मिक क्रांतिकारी नारा लगाते हैं काम महाशत्रु है तो संविधान में इसको कोई स्थान नहीं मिलता और जब कोई बलात्कार करता तो उस पर मुकदमा चलाये जाते, जेल में भेज दिया जाता। हम कहते हैं क्रोध बैरी है इसे भगाओ तो कोई इस पर ध्यान नहीं देता; लेकिन जब हम हिंसा करते हैं तो हमें फाँसी दे दी जाती है। हम कहते हैं लोभ हमारा दुश्मन है तो लोग मुँह बिचकाकर चले जाते और जब चोरी करते हैं तो पीटने लगते। हम कहते हैं मोह त्यागो तो लोग नाक-भौं सिकोड़ने लगते हैं और जब हम अपने सम्बन्धियों, बाल-बच्चों के लिये झूठ बोलते, बेईमानी करते, घस लेते तो लोगों की फुसफुसाहट शुरू हो जाती। हम कहते हैं अहंकार मिटाओ तो लोग आँखें नचाते हैं और जब हम अहंकारवश लम्बी-लम्बी बातें करते, झगड़ा लड़ाई करते तो फिर आँखें तरेरने लगते हैं लोग।

अब बताइये क्या किया जाय ? किसके खिलाफ क्रांति छेड़ी जाय ? काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के खिलाफ या फिर इन विकारों के शासन में पलने वाले कामी, क्रोधी, लोभी, मोही और अहंकारियों के खिलाफ ?

अब परमपिता परमात्मा हमारा नेतृत्व प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा कर रहे हैं। उन्होंने आध्यात्मिक क्रांति का उद्घोष किया है। जब तक हम पाँच विकारों को नहीं मिटाते, परिवर्तन असंभव है। रोग, शोक, दुख, अशांति और आलस्य तब तक नहीं हमारा पीछा छोड़ेगा जब तक हम काम, क्रोध, लोभ, मोह, और अहंकार के खिलाफ युद्ध नहीं छेड़ते।

युवा पीढ़ी जरा विचार करे, कितना मजेदार है यह आन्दोलन। हर युवा और युवति यह संकल्प यदि कर ले कि हम जन-जन तक इस क्रांति की लहर फैलाकर रहेंगे। पाँच विकार मिटाओ, सदाचार लाओ का नारा नहीं, अपितु ईशारा हो।

अगर हमारी माँगें जायज हैं तो सरकार संविधान में संशोधन करे। पाँच विकारों को मिटाने का कानून बनाये। अगर हमारी माँग उचित नहीं हैं, यह क्रांति उन्हें पसंद नहीं है तो ठीक है हम उनकी ही बात मानते हैं। हम अपराध करते हैं वह मत बंद करे हमें जेल में। आखिर क्या आवश्यकता है तब पुलिस और कानन की ?

जब सतयुग थी तो कहाँ थी वहाँ पुलिस ? कहाँ था वहाँ कचहरी ? कहा था वहाँ जज ? किस इतिहास में लिखा है कि राम-राज्य में जेल था और लोग कटघरे में जाते थे ? कोई दिखावे तो मानूं। नहीं था, बिलकुल नहीं था, क्योंकि वहाँ पाँच विकार ही नहीं थे और जब पाँच विकार नहीं थे तो भ्रष्टाचार और अत्याचार भी नहीं होते थे।

हम युवा वर्ग फिर से वही ही सृष्टि चाहते हैं जहाँ जेल, पुलिस या कचहरी की आवश्यकता नहीं हो। हाँ, हमें चाहिए वही राज्य जहाँ बाघ-बकरी निर्भीक एक ही घाट पर पानी पीते थे, जहाँ घरों में ताला नहीं लगाया जाता था, जहाँ की स्त्रियाँ निर्भय हो स्वच्छंद विचरण करती थीं, जहाँ दूध-दही की नदियाँ बहती थीं, सम्पूर्ण शांति और सुख व्याप्त था। हमें चाहिए वही रामराज्य जिसका सपना राष्ट्रपिता बापू देखा करते थे।

अब स्वयं परमपिता परमात्मा शिव बाबा ने इस आध्यात्मिक क्रांति का बिगुल बजाया है। आइये हम सभी युवक और युवतियाँ एकजुट होकर इन पाँच विकारों पर हमला बोल दें ताकि हमारा भारत फिर से पवित्र और स्वच्छ हो जाय। कलियुगी नर्क मिटकर सतयुगी स्वर्ग में परिणत हो जाय। हम युवाओं का एक ही संकल्प हो—हम सृष्टि का नव निर्माण करके ही रहेंगे। भारत को पुनः स्वर्ग बनाकर दुखों के अंधकार से सुखों के प्रकाश में ले जायेंगे।

भुनेश्वर सेवा केन्द्र पर बच्चों के लिये चरित्र उत्थान के एक प्रोग्राम का उद्घाटन सन्देशी बहन कर रही हैं।

मानसरोवर में डुबकी

ले०—ब्र० कु० चक्रधारी, शक्ति नगर, दिल्ली

भारतीय पौराणिक कथाओं में यह बात बहुत प्रसिद्ध है कि तिब्बत की तरफ़ एक सरोवर है जिसे मानसरोवर कहा जाता है। उस मान सरोवर की विशेषता यह है कि उसमें जो भी व्यक्ति स्नान करता है, वह अतीव सुन्दर हो जाता है। बच्चों की कहानियों में इस प्रकार के किस्से बताये जाते हैं कि परियाँ मानसरोवर में नहाया करती हैं। वास्तव में न तो पक्षी की तरह परों अथवा पंखों वाले कोई मनुष्य होते हैं जिन्हें परियाँ कहा जा सके और न ही ऐसा कोई पानी का मान सरोवर होता है जिसमें स्नान करने से मनुष्य परी-रूप हो जाए। वास्तविकता तो यह है कि ईश्वरीय ज्ञान का श्रवण कर उसकी गहराई में जाना अथवा अन्तर्मनन करना ही वह सरोवर है जिसमें डुबकी लगाने से आत्मा के अवगुण, मैले संस्कार, दूषित स्वभाव समाप्त हो गुणों का विकास होने लगता है, दिव्य संस्कार व स्वभाव मलीन संस्कारों का स्थान ले लेते हैं मानो कि आत्मा अतीव सुन्दर हो जाती है। और ऐसी आत्मा पाप के बोझ से हल्की हो जाने के कारण उड़ने लगती है। इसी-लिए उसकी तुलना पंखों वाले मनुष्य (परियों) से की गई है। अब वह अन्तर्मनन क्या है और कैसे किया जाता है, आज हम उसी पर विचार करेंगे।

जैसे भोजन खाकर उसे पचाना होता है ताकि उसके पौष्टिक तत्व हमारे शरीर में शक्ति पैदा करें वैसे ही बाबा जो हमें नित्य श्रीमत देते हैं, ईश्वरीय ज्ञान सुनाते हैं, जिसे हम यहाँ की भाषा में मुरली अथवा वाणी कहते, उसमें ज्ञान आत्मा का भोजन है। इसे भी हमें श्रवण के बाद आत्मा में धारण करना होता है। जिसे लोग मनन व निधिध्यासन कहते हैं। बाबा गाय का मिसाल देते हैं कि जैसे गाय घास खाकर जुगाली करती या दही को बिलोकर जैसे मक्खन निकालते हैं, यह भी वैसी ही क्रिया है जिससे स्वपरिवर्तन होता है। जब तक अपने अन्दर से परिवर्तन न आए तब तक देखा गया है कि कोई कितनी भी अच्छी बात बताए, सुनाए, वह असर नहीं होता क्योंकि भोजन को पचाना तो खुद ही होता है, किसी के खिलाने से तो मज़बूती नहीं आती। तो यह एक क्रिया है जिससे आत्मा का भोजन पच कर शक्ति का स्वरूप लेता है। अब ऐसे तो इसका बहुत विस्तार है हम कुछेक उदाहरण देकर ही स्पष्ट करेंगे।

इसमें सबसे पहली जो मुख्य बात है जिसकी ओर बाबा के प्रवचनों में, जिन्हें हम मुरली अथवा वाणी कहते हैं, बार-बार ध्यान खिचवाया जाता है, वह है कि मेरी स्वयं की पहचान क्या है? कहने में बात बड़ी साधारण है। वास्तव में यह बहुत महत्वपूर्ण है। यह परिवर्तन की नींव है। किसी मकान की जो नींव बनाई जाती है वह तो पृथ्वी के नीचे चली जाती है, देखने में तो बाहर की इमारत ही नज़र आती है लेकिन वो इमारत खड़ी तो नींव पर ही होती है। और नींव को खूब बार-बार दबा-दबाकर ठोक-ठोक कर बनाया जाता है। इसलिए एकान्त में हमें इस पर अन्तर्विचार करना चाहिए और निरीक्षण करना चाहिए कि मेरा असल स्वरूप क्या है? यह आध्यात्मिक ज्ञान का अल्लिफ व बे है? मैं कौन हूँ? यह अध्यात्म का पहला प्रश्न है। जब मैं स्वयं से बैठ कर पूछती हूँ कि मैं कौन हूँ तो उत्तर मिलता कि मैं एक आत्मा हूँ, शरीर चोला है। अच्छा अगर मैं एक आत्मा हूँ तो यह बात मेरे व्यवहार में कैसे आनी चाहिए।

इस बात को समझने या न समझने, मानने या न मानने से क्या अन्तर होता है ? उत्तर में बाबा की बताई यह बात सामने आती है कि जैसे तुम आत्मा हो, वैसे ही अन्य सब देहधारी भी आत्माएँ हैं, उनको आत्मिक दृष्टि से देखो। फिर मैं स्वयं से पूछती हूँ, आत्मिक दृष्टि से देखने का क्या मतलब है ? उत्तर मिलता है कि इन दो स्थूल चक्षुओं से तो देह व देह का संसार दिखाई देता है परन्तु इनसे देखते हुए भी ज्ञान चक्षु द्वारा यह ध्यान में रखो कि मुख से बोलने वाले, कान से सुनने वाले ये सब भी ज्योति बिन्दु आत्माएँ हैं। प्रश्न उठता है कि इस सबसे क्या होगा ? यह काम बढ़ाने वाली बात तो नहीं। उत्तर मिलता है कि इससे तो बहुत अन्तर पड़ेगा, बोझ हल्का हो जाएगा। काम बल्कि सहज हो जाएगा। फिर प्रश्न उठता है कि वह कैसे ? तो मन में यह आता है कि बाबा ने कहा है कि स्वयं को प्रकाश व शक्ति स्वरूप, (Light-Might) निश्चय करने से फरिश्तेपन की स्थिति होगी और हल्कापन आ जाएगा। सभी को रूहानी दृष्टि से देखने से विकारी (Criminal) दृष्टि नहीं होगी, पवित्र दृष्टि (Civil-eyed) हो जाएगी। और सभी को भाई-भाई समझोगे, जिससे सारा नाता ही बदल जाएगा। और स्वयं की असलियत में टिकने से आत्मा के पिता परमात्मा की याद आएगी जो कि आनन्द स्वरूप, शान्त स्वरूप, प्रेम स्वरूप है। इस याद रूपी योग से आत्मा को भी लाइट व माइट का इंजेक्शन लग जाएगा। इस प्रकार अन्तर्विचार करते फिर सोचना है कि अच्छा अगर मेरा वास्तविक स्वरूप ही आत्मा है तो मैं उसमें कहाँ तक स्थित हूँ ? और फिर इस स्वरूप में स्थित होकर देखो और परमपिता परमात्मा के जो महान गुण हैं, उनका अनुभव करने का यत्न करो। इस प्रकार करते हुए जब उसमें स्थित हो जाते हैं तो उस अन्तर्मुखता से और उस अभ्यास से जो आनन्द, शान्ति और खुशी मिलती है, वह आत्मा की खुराक से भी ज्यादा महसूस होती है। ऐसा लगता है कि एक अखुट खज़ाना मिल गया और फिर वह प्राप्ति जीवन में परिवर्तन का आधार बन जाती। तो परिवर्तन की प्रकिया क्या है (१) ज्ञान सुनना, (२) फिर मनन व अन्तर्विचार करना (३) फिर उसमें स्थित हो जाना और उससे जो अनुभूति होती है वो ही जीवन परिवर्तित करती है।

इसी प्रकार बाबा कहते हैं—क्रोध मत करो। क्रोध अग्नि के समान है जो जलाता है। अग्नि तो एक बार जलाती है, यह बार-बार जलाता है। स्वयं को अग्नि में जलाना, यह कोई समझदार का काम थोड़े ही है। बार-बार अपने को नर्क में धकेलना, दलदल में फँसाना, आप-घात करना यह कोई अच्छी बात तो नहीं है। तो मन कहता है कि अच्छी बात नहीं है परन्तु यह दुनिया इतनी बिगड़ चुकी है व कई लोग इतने ढीठ हैं कि रोब व क्रोध के बिगर मानते ही नहीं। क्रोध करना तो नहीं चाहिए परन्तु कई बार आदमी मजबूर हो जाता। परन्तु बाबा कहते कि अगर कोई जज का बेटा होकर किसी को पत्थर, डंडा या खंजर मारे और फिर कचहरी में जाकर कहे कि मैंने इसे ठीक करने के लिए डंडा मारा है तो क्या कोई मानेगा ? जज का बेटा होकर उसे अपराधी के रूप में पेश किया जाए अथवा राजा का बेटा होकर दरबार में अपराधी के रूप से लाया जाय, क्या यह अच्छा है ? और फिर मजबूरी क्या ? मजबूरी तो कमज़ोरी की निशानी है। बाबा कहते मजबूर नहीं मज़बूत बनो। मन फिर कहता है कि जब बार-बार समझाने से कोई बात नहीं मानता, ठीक काम नहीं करता, ठीक तरह से नहीं चलता या नुकसान कर देता है, तब क्रोध करना ही पड़ता है। परन्तु बाबा कहते हैं कि स्वयं को बदलने के बिना दूसरे को कैसे बदल सकते। The change should start from yourself...स्वपरिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन होगा। 'वर्ना औरों को नसीहत, खुद मियां फसीयत, वाली बात हो जाएगी। दूसरा कोई नुकसान करता है तो क्या क्रोध करने वाला नुकसान नहीं करता। अगर कोई और काम बिगाड़ता है तो क्या क्रोध

से स्वयं को नहीं बिगाड़ते। बिगाड़ने को ही तो विकार कहा जाता। अगर कोई बार-बार कहने से हमारी बात नहीं मानता तो हम तो फिर भी इन्सान हैं और क्रोध न करने के लिए तो भगवान स्वयं बार-बार कहते। इसलिए क्रोध करने वाला मानो परमात्मा की बात नहीं मानता तो बड़ा अपराधी कौन हुआ? अच्छा अगर कोई काम ठीक नहीं करता तो उसमें कोई योग्यता, संस्कार की कमज़ोरी होगी तो कमज़ोर की मदद करनी चाहिए, उसे सहारा देना चाहिए? या धक्का देना चाहिए? अगर कोई अपने संस्कार के वशीभूत है तो उसे संस्कार से मुक्त कराने का सहयोग देना चाहिए बजाय इसके कि हम भी अपने संस्कार के वशीभूत हो जाएँ। बाबा तो कहते क्रोध भत है जिसके वश कोई भी होना नहीं चाहेगा।

कहा जा सकता है कि कोई व्यक्ति ऐसे होते हैं जो परेशान ही कर देते हैं। बाबा कहते, तुम अपनी शान से परे क्यों होते हो। क्या क्रोध करना शान है? बाबा यह भी कहते हैं कि बदला मत लो स्वयं बदल कर दिखाओ। और जो भी परिस्थिति सामने आती है उसे स्वस्थिति से जीतो। जो निन्दा करता है, उसको भी अपना मित्र समझो—निन्दा हमारी जो करे मित्र हमारा सो। इसलिए शीतल बन कर दूसरों को शीतल बनाने की सेवा करनी है।

इसी प्रकार बाबा कहते हैं कि निरन्तर शिव बाबा की याद में रहने का अभ्यास करो। इसी बात को बाबा दूसरे शब्दों में यूँ भी कहते कि सदा यह समझो कि बाबा आपके साथ है अथवा ट्रस्टी बन कर चलो। तो प्रश्न उठता है कि आत्मा परमात्मा के साथ कैसे रह सकती है और साथ रहने का भाव क्या है? और ट्रस्टी होकर व्यवहार में कैसे तत्पर होना होता है?

तो मूल बात यही समझ में आती है कि अगर हमें यह अच्छी तरह मालूम हो कि शिव बाबा हमें क्या अनमोल खज़ाना देते हैं। ये जो ज्ञान के रत्न वो देते, योग की सहज विधि सिखाते, विकारों की दलदल से निकाल कर इतना स्नेह देते हैं, हमें मनुष्य से फरिश्ता अथवा देवता बनाते और सदा के लिए दुख अशान्ति से छुड़ाते। तो उनके प्रति इतना प्यार इतना स्नेह मन में आता है कि उन पर हम न्योछावर जाएँ, वारि जाएँ। बाबा, आपकी तो कमाल है कि आपने मन को टिकाने का ऐसा सहज साधन बता दिया कि जिससे सदा आनन्द ही आनन्द है और शान्ति ही शान्ति है। इस प्रकार सोचते-सोचते जब उस लग्न में मग्न हो जाते हैं तो इस स्थिति में ऐसा अपार सुख मिलता कि शिव बाबा साथ ही महसूस होता है। जब हम बाबा की बताई हुई शिक्षाओं पर चलते हैं और स्वयं को आत्मा मानकर व्यवहार में उतरते हैं तो हरेक कार्य सेवा स्वरूप हो जाता है और आत्म-निश्चय की स्थिति में आत्मा के देश और आत्मा के पिता परमात्मा की याद स्वतः ही आती है। परमात्मा की बजाय उसे बाबा कहना, यह शब्द ही नजदीकी का अनुभव कराता है। उस बाबा का साथ होने से हम सब फिक्रों से फारिग हो जाते हैं क्योंकि वह समर्थ मेरे साथ है। यह कोई स्थूल बात तो है नहीं, मन से, बुद्धि से, धारणा से, आज्ञा पालन से, स्नेह से वो साथ महसूस होता है। लौकिक रूप में भी तो ऐसे ही होता है कि जो दिल से दूर हो, वह पास होते हुए भी दूर होता है और जिनका दिल मिला हुआ हो, जिनमें भावों व विचारों की नज़दीकी हो, वही नज़दीक होता है। जो समान हों, वही समीप होते हैं। मेरा हमेशा यही पुरुषार्थ रहता है—हमारा जो शिव बाबा है जिसे दुनिया परमात्मा कहती है मैं उसी का ही सब कुछ समझकर निमित्त बन कर चलती हूँ। मेरा यह तन, मेरे ये सब साधन, ये उसी के हैं। इस धारणा से उनमें मेरा लगाव नहीं रहता, अपनापन नहीं रहता, 'मैं' 'मेरे', की भावना नहीं रहती, ममत्व नहीं रहता, मोह मिट जाता है और ये मोह ही तो सबसे बड़ी दलदल है। आ हा, उस वक्त इतनी खशी होती है कि बाबा ने मुझे

दलदल से निकलने का तरीका बता दिया। मेरा जो सब-कुछ था, वह अब शिव बाबा का है और शिव बाबा का जो सब-कुछ था, वह अब मेरा हो चुका। ये हमारा मट्टा सट्टा अथवा अदला बदली (Exchange) का समझौता (Agreement) हो गया है। इससे जीवन में कितना हल्कापन आ गया है कि एक तो मैं आत्मा लाइट (प्रकाश) हूँ और लाइट का वज़न तो होता नहीं। दूसरा ज्ञान की लाइट मिली, तीसरे शिव बाबा के हवाले करने से बोझ उतर गया तो लाइट (हल्की) हो गई। और चौथा शिव बाबा जो प्रकाश स्वरूप (लाइट) है, वह मुझे मिल गया। तो इसलिए लाली देखन मैं गई मैं भी हो गई लाल—ऐसा सोचते हुए मन में बाबा के लिए प्रेम उमड़ता है। जैसे धौंकनी से अग्नि प्रज्जवलित होती है, ऐसे ही इस प्रेम से भी योग की अग्नि प्रज्जवलित होती है जिससे विकर्म भस्म होते, विकार समाप्त होते। इससे ही स्वपरिवर्तन, व इससे विश्व परिवर्तन होता है।

यह है आत्म निरीक्षण, आत्म चिन्तन, अन्तर्मनन व अन्तर्विचार की विधि।

किसी ने कहा है।

ऊना कमाइयां पाईयाँ जिन गहरे पानी पैठ

यही है गहरी डुबकी जिससे आत्मा पावन व शीतल हो जाती है। यह है मान सरोवर जिसमें डुबकी लगाने से हंस बन जाते व मोती मिलते हैं, यही है विचार सागर मंथन जिससे अमृत निकलता है और हम अमर बन जाते हैं। यही इस कहानी और आखानी (आख्यान) का अन्त होता है। योगाभ्यास की इसी प्रणाली को अपनाते हुए हम बाबा की महिमा में टिक जाएंगें और योग स्थित हो जाएंगे। आओ तो अब प्यारे बाबा की याद में बैठें—जो बाबा ज्योति स्वरूप है, आनन्द स्वरूप है, प्रेम स्वरूप है, पतित पावन है। दुख हर्ता सुख कर्ता है, मुक्ति, जीवन्मुक्ति का दाता है, काल के पंजे से छुड़ाने वाला है। अरे दुनिया का सब यही रखा रह जाना है और एक दिन आत्मा रूपी पंछी शरीर रूपी आशियाने से उड़ जाना है और उड़ कर कहां चले जाना है जो इसका असली ठिकाना है। हम कहते हैं न कि यह संसार मुसाफिर खाना है और आखिर एक दिन यहां से चले जाना है। जाने का बनना केवल कोई बहाना है और फिर शिव बाबा एक अपना, बाकी सब बेगाना है। ऐ दूर देश के मुसाफिर कहां जाना है? कहां तेरी मंजिल कहां ठिकाना है? शिव बाबा का कहना है कि सूर्य चांद तारागण से भी पार जो ज्योति का देश है, प्रकाश की दुनिया है, जिसे ब्रह्मलोक, परलोक, रूहों की दुनिया इत्यादि के नाम से कहा जाता है, आखिर लौट के उस घर जाना है। अब चलो तो उस घर चले, उस पिता के पास जो ज्योति स्वरूप है, बिन्दु रूप है, कल्याणकारी है और इसलिए शिव है। जहाँ पर आत्मा होकर ही जा सकते हैं, यह तन तो वहाँ जा नहीं सकता, मन ही ऐसा विमान अथवा राकेट है जिस द्वारा वहाँ पहुँच सकते। चढ़ो-मन रूपी राकेट पर, बुद्धि में अपनी परमधाम की मंज़िल हो, जाना है प्यारे बाबा के पास, जाने वाला मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा ज्योति बिन्दु हूँ। मैं कौन हूँ—ज्योति बिन्दु। कहाँ जाना है? ब्रह्मलोक में, ज्योति के देश में जहाँ शान्ति ही शान्ति है।

किसके पास?—प्यारे से प्यारे शिव बाबा के पास।

कौन है शिव बाबा?—ज्योति स्वरूप, ज्ञान का सागर, सर्व आत्माओं का पिता, रंक से राव बनाने वाले, नर्क को स्वर्ग बनाने वाले।

अब वहाँ पहुँच कर बात करनी है शिव बाबा से कि शिव बाबा, मीठे बाबा, प्यारे बाबा, सिकिलधे बाबा, लाडले बाबा, आप हमें ज्ञान का कितना अनमोल ख़ज़ाना दे रहे हो, किस विधि आप सहज ही हम बंधन में बंधे आत्मा रूपी पंछियों को आजाद करा रहे हो। बाबा आप सचमुच प्रेम स्वरूप हो, आनन्द स्वरूप हो, शान्ति के सागर हो··· □

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ६/१६ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा भारत मुद्रणालय, शाहदरा दिल्ली-३२ से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70